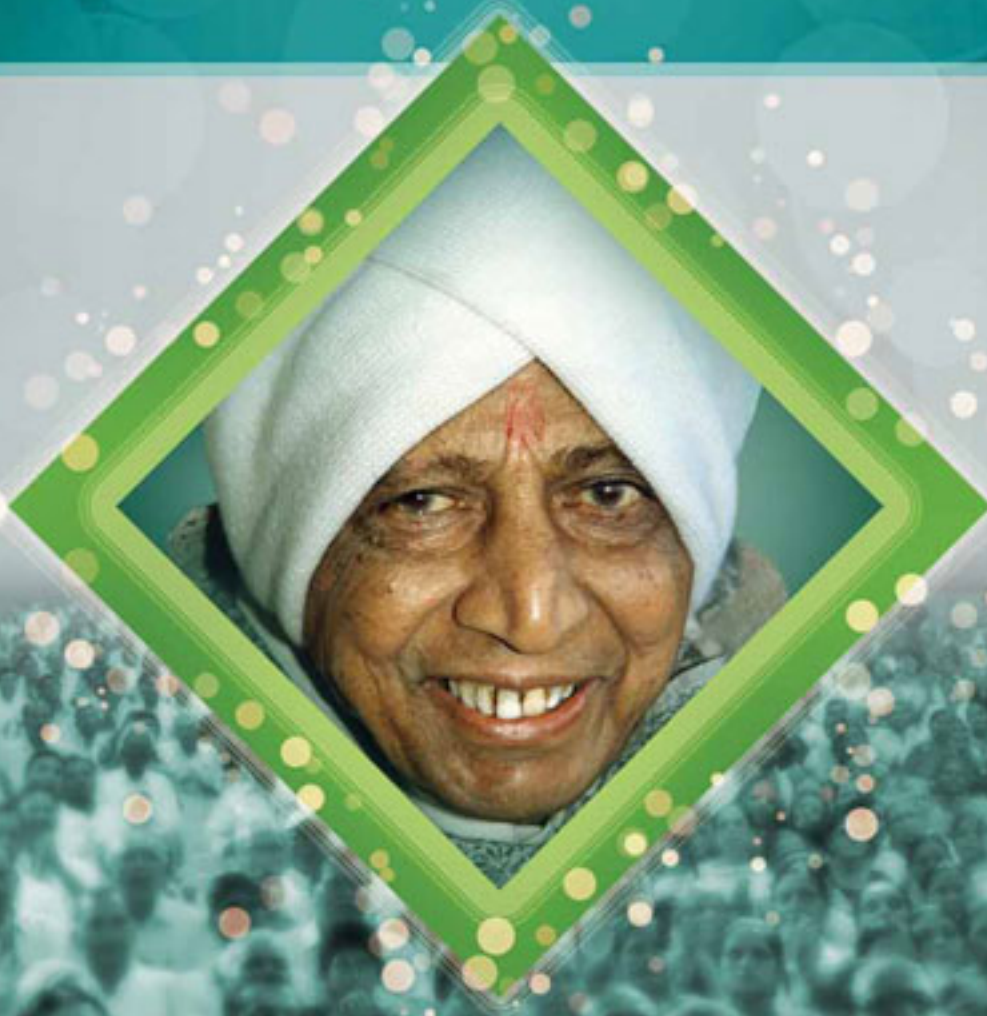


फरवरी 2015

किंमत ₹ 10

दादावाणी



जहाँ आत्मा प्राप्त कर लिया है, वहाँ संयम है। अर्थात् अपने सभी महात्मा संयमी कहलाते हैं। आप इन पाँच आज्ञा का पालन करते हो तब आपको निरंतर आंतरिक संयम रहता ही है। वह संयम ही मोक्ष की ओर ले जाता है।

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : १० अंक : ४

अखंड क्रमांक : ११२

फरवरी २०१५

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडाज, जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 28 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

आंतरिक संयम से प्राप्त पूर्णता

संपादकीय

सामान्य तौर पर ऐसा सुनने में आता है कि भगवान का साक्षात्कार करने के लिए, आत्मा को पहचानने के लिए या मोक्ष प्राप्ति के लिए, संसार के मोह-माया और लक्ष्मी का त्याग किए बिना, संयम लिए बिना संभव नहीं है। लेकिन वास्तव में त्याग करना, संयम नहीं है और लौकिक में जिसे संयम मानते हैं वह भगवान की भाषा का संयम नहीं है। तो फिर वास्तविक संयम किसे कहा जाए? संयम दो प्रकार के हैं: एक, बाह्य संयम और दूसरा, अंतर संयम। बाह्य संयम यानी घर-बार छोड़कर, भेष बदलकर, दीक्षा लेकर संसार का त्याग करते हैं और गुरु की आज्ञा में रहकर क्रोध-मान-माया-लोभ को क्रमशः कम करते जाते हैं। लेकिन जिनमें राग-द्वेष होते हैं, खुले कषाय होते हैं, वे सभी असंयमी कहलाते हैं, फिर चाहे वे त्यागी हों या गृहस्थ हों। आंतरिक संयम यानी आत्मज्ञानी का परिचय होने से, उनका ज्ञान सुनने से धीरे-धीरे भाव संयम उत्पन्न होता है। एक बार ज्ञानीपुरुष के दर्शन किए हों तो भाव संयम उत्पन्न होता है। वास्तविक संयम आत्मा की हाजिरी से उत्पन्न होता है। खुद के स्वरूप की प्रतीति बैठे तभी से वास्तविक संयम में आता है।

अहंकार से जो कुछ भी किया जाता है, वह सब त्याग कहलाता है। निश्चय से इसे भगवान ने नियम कहा है। नियम अर्थात् उस समय उस का मन उसी (नियम) के अनुसार कार्य करता है, नियम के अधीन। यम किसे कहते हैं? नियम में आने की इच्छा जगे, तभी से ऐसा कहा जाता है कि यम में आ गया। जब संयम में आ जाता है तब किनारा आ जाता है। खुद के क्रोध-मान-माया-लोभ से सिर्फ खुद पर ही असर होता है, अन्य किसी को किंचित मात्र भी दुःख न हो तभी से संयम कहलाता है। संपूर्ण क्रोध-मान-माया-लोभ खत्म होने तक वह संयम कहलाता है। भयंकर उपसर्ग में भी संयम रहे, वही सच्चा संयम।

जिसे आंतरिक संयम रहे, उसे महात्मा कहते हैं। जब तक कषाय करता है, तब तक महात्मा नहीं कहलाता। आंतरिक संयम किसे कहते हैं? चंदूलाल (फाइल नं.१) क्रोध करे लेकिन खुद अंदर से मना करता रहे। ‘अरेरे! ऐसा कैसे कर सकते हैं,’ ऐसा रहे तो उसे आंतरिक संयम कहते हैं। यदि पाँच आज्ञा का पालन करे तो उसमें निरंतर आंतरिक संयम ही रहता है। यह (ऐसा) संयम मोक्ष की ओर ले जाता है।

ज्ञान लेने के बाद चाहे जैसा भी भरा हुआ माल हो, संयमवाला या असंयमवाला, उसका उदय आए और उसे वीतराग भाव से देखें तो है, वह संयम। असंयम पर संयम को संयम कहते हैं। यदि कोई डाँटे, गालियाँ दे, अपमान करे, तो वह बहुत हितकारी है। खराब उदय हमें संयमी बनाते हैं। बहुत अच्छे उदय हों तो वे संयमी नहीं बनाते। बहुत भारी कर्म आने पर भी अगर आज्ञा में रहें तो जबरदस्त आत्मशक्ति प्रकट होती है। और संयम का नियम कैसा है? मल्टिप्लिकेशन से शक्ति बढ़ती है, जागृति बढ़ती है और जुदा रहने से संयम परिणाम उत्पन्न होता है। और वह संयम परिणाम ही व्यवहार से मुक्ति दिलवाकर, निश्चय की पूर्णता करवाता है।

प्रस्तुत संकलन में बाह्य संयम से लेकर ठेठ संपूर्ण अंतर संयम तक की सैद्धांतिक समझ परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से प्राप्त होती है। जो महात्माओं को यथार्थ संयम तक पहुँचकर मोक्षमार्ग की पूर्णता के पुरुषार्थ के लिए सहायक होगी, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

आंतरिक संयम से प्राप्त पूर्णता

संयम से सिद्ध हो मोक्ष

प्रश्नकर्ता (मुमुक्षु) : क्या संयम लिए बिना मोक्ष मिल सकता है ?

दादाश्री : संयम लिए बिना कभी किसी का मोक्ष हुआ ही नहीं है। ऐसा प्रश्न क्यों पूछना पड़ा ?

प्रश्नकर्ता : साहब, कभी-कभी ऐसा संशय होता है। कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि बिना संयम लिए भी मोक्ष मिलता है। इसलिए उस प्रश्न के जवाब के लिए ही यह प्रश्न पूछा है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन क्या आप संयम को पहचानते हो ? संयम किसे कहते हो ?

प्रश्नकर्ता : जो चारित्र पालन करे उसे।

दादाश्री : चारित्र किसे कहते हो ? कपड़े पहनें (त्यागवाली वेशभूषा धारण करे) तो क्या उससे चारित्र हो गया ?

प्रश्नकर्ता : कपड़े पहनने से तो नहीं, लेकिन खुद संयम के मार्ग पर रहे और चारित्र पालन करे, उसे संयम माना जाता है।

दादाश्री : आप समझते नहीं हो और संयम जाने बगैर ही आप लोगों से कहते हो, कि संयम पालन के बिना मोक्ष में कैसे जाओगे ? अरे ! लेकिन तूने संयम को पहचाना कैसे ? कोई संयम से परिचित है ? (आत्मज्ञान के बगैर) इंसान संयम को नहीं पहचान सकता।

संयम की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : संयम की परिभाषा क्या है, यह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : आप संयम की क्या परिभाषा समझते हो ? संयम की परिभाषा होनी चाहिए न ?

प्रश्नकर्ता : जिनमें राग-द्वेष न हों।

दादाश्री : हं, जिनमें राग-द्वेष नहीं होते, वे तो वीतराग ही कहलाते हैं, लेकिन संयमी पुरुष तो उनसे निम्न होते हैं, डाउन होते हैं। राग-द्वेष नहीं होना, वह तो बहुत उच्च पद कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर संयम किसे कहते हैं ?

दादाश्री : अब मैं बताता हूँ कि संयम किसे कहते हैं। दो प्रकार के संयम:- एक बाह्य संयम और दूसरा अंतर संयम। बाह्य संयम से बीबी-बच्चे छोड़कर, भेष-वेष बदलकर, दीक्षा-भिक्षा लेकर खाते हैं और गुरु की आज्ञा में रहते हैं। क्रोध-मान-माया-लोभ को धीरे-धीरे, क्रमशः कम करते जाते हैं, तो वह बाह्य संयम कहलाता है। अंदर का संयम किसे कहते हैं कि क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते और यदि होते भी हैं तो सामनेवाले को नुकसान न पहुँचाएँ ऐसे होते हैं। अहंकार-ममता नहीं होते। इस अंदर के संयम से मोक्ष और उस बाह्य संयम से उच्च गति मिलती है।

संयम अर्थात् कषायों का संयम होना, राग-द्वेष का संयम होना, क्रोध-मान-माया-लोभ का संयम होना, उसे संयम कहते हैं। वे तो खचाखच भरे पड़े

हैं। ज़रा सा छेड़ने जाएँ न, तो छेड़ने से पहले ही वे खड़े हो जाते हैं। उसे संयम कैसे कह सकते हैं?

मोक्ष दाता की शरण से मुक्ति

प्रश्नकर्ता : फिर भी द्रव्य से तो संयम लिया हुआ है ही न?

दादाश्री : वह काम नहीं आता, भाव संयम चाहिए। द्रव्य संयम तो, अनंत जन्मों से यही करते रहे हैं! भाव संयम के बिना आत्मा पहचाना नहीं जा सकता। यह बाह्य संयम तो अनंत जन्मों से लेते आए हैं। बाह्य संयम तो अनंत जन्मों तक किया लेकिन जब तक अंतर संयम उत्पन्न न होता, तब तक आत्मा को कैसे पहचाना जा सकता है?

प्रश्नकर्ता : भाव संयम कैसे पहचाना जा सकता है?

दादाश्री : ज्ञान के द्वारा। किसका ज्ञान? आत्मा का ज्ञान। आत्मा का ज्ञान कहाँ होता है? शास्त्रों में शब्दों के रूप में होता है, लेकिन सच्चा ज्ञान ज्ञानी के पास होता है। वहाँ पर अपना निबेड़ा आता है, नहीं तो किसी काल में भी हल नहीं आ सकता। वह तो आत्मज्ञानी से (ज्ञान का) परिचय होने पर, उनका ज्ञान सुनने पर, धीरे-धीरे भाव संयम उत्पन्न होता जाता है।

अतः जब तक भाव संयम उत्पन्न न हो, तब तक आत्मा की बातें काम नहीं आती। यदि एक ही बार ज्ञानी के दर्शन किए हों तो थोड़ा-बहुत भाव संयम उत्पन्न होता है, (कुछ) अंश तक होता है। यदि ज्ञानीपुरुष के दर्शन ही नहीं किए हों, तो कैसे हो सकता है?

आत्मा प्राप्त किए बिना संयम नहीं आता। या फिर आत्मा प्राप्त नहीं हुआ हो लेकिन ज्ञानीपुरुष मिले हों तो उनके दर्शन से संयम प्राप्त हो जाता है। उनकी आज्ञा में आ गए तो संयम प्राप्त होता है। पहले आज्ञारूपी संयम की शुरूआत होती है, उसके

बाद मूल संयम की शुरूआत होती है। और ऐसे संयम के बिना मोक्ष नहीं हो सकता।

भाव संयम द्वारा आत्म रमणता

प्रश्नकर्ता : आत्मा में रमणता कैसे की जा सकती है?

दादाश्री : यदि भाव संयम में आ जाए तो। भाव संयम में आ गए तब वह आत्मा की रमणता ही है न! चंदूभाई, (ज्ञान प्राप्त महात्मा), ज्ञान लेने के बाद तुम क्या आत्मा को भूल सकते हो? कितनी देर के लिए भूल जाते हो?

प्रश्नकर्ता : थोड़ी-थोड़ी देर में तुरंत याद आ जाता है।

दादाश्री : आ जाता है न? जो अपने-आप आ जाए, याद न करना पड़े, वह भाव संयम हैं और जिसे याद करना पड़े वह द्रव्य संयम है। समझ में आया आपको?

कृपालुदेव ने कहा है कि 'मोक्षदाता की शरण में जाना पड़ेगा, शरण स्वीकार करनी पड़ेगी, तो एक घंटे में मुक्ति हो सकती है।' क्योंकि भगवान की शरण स्वीकार करनी है, सिर्फ इतना ही है। अन्य कुछ भी नहीं। यह अक्रम मार्ग वीतरागों का ही मार्ग है। वीतराग मार्ग के अलावा और कहीं मुक्ति नहीं हैं, संपूर्ण मुक्ति नहीं है, आत्यंतिक मुक्ति नहीं है। भाव संयम में आए बगैर किसी की मुक्ति हुई ही नहीं। यह द्रव्य संयम तो कैफवाला है, बल्कि कैफ चढ़ाता है। पाँच महाव्रतधारी कोई भी नहीं है अभी। पाँच महाव्रत कहाँ से लाएँ? पाँच महाव्रत, वे तो भाव संयम से हैं। अणुव्रत और महाव्रत, वे भाव संयम से हैं। द्रव्य संयम में अणुव्रत-महाव्रत नहीं होते लेकिन लौकिक में चलता रहता है। यह सब लौकिक है।

भाव संयमी देखे निज दोष

प्रश्नकर्ता : लोकोत्तर (अलौकिक) (असाधारण, विलक्षण) कब पता चलेगा? (कब महसूस होगा?)

दादाश्री : लोकोत्तर तो जब भाव संयम में आ

जाए तभी सचमुच में महाव्रत और सचमुच में अणुव्रत उत्पन्न होते हैं। भाव संयम में आने के बाद खुद को खुद के दोष दिखाई देते हैं और उन दोषों का निवारण करता है। जो नए दोष उत्पन्न हों उनका निवारण करता है। उन सभी दोषों को धोता ही रहता है। जब तक भाव संयम में नहीं आ जाता, तब तक खुद के दोष दिखाई नहीं देते। सामनेवाले के दोष देख लेता है। सामनेवाले के दोष देखता है या नहीं देखता? ऐसा सब आता है, है न? आपको खुद के कितने दोष दिखते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ। सामनेवाले के दोष देखना आता है। ठीक से आता है, हं।

दादाश्री : इसी को द्रव्य संयम कहते हैं। और वहाँ पर महाव्रत और अणुव्रत नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : खुद के दोष देखनेवाले तो कोई-कोई ही होते हैं।

दादाश्री : खुद के दोष कैसे देखे जा सकते हैं? यदि कोई पूछे कि आप में कितने दोष हैं? तब कहेगा, मुझमें दो-तीन दोष हैं, ज्यादा नहीं हैं। दो-तीन दोष बता देता है। और फिर कहता है, मुझमें अन्य कोई दोष नहीं है। इसमें बहुत हैं, कहेगा। (खुद के) दोष देखनेवाला हो जाए फिर तो भगवान होने की तैयारी हो गई। भाव संयम समाधि, भाव संयम में आने की शुरूआत हो गई।

आत्मा की हाज़िरी में रहता है संयम

निरंतर संयम रहना चाहिए। आपने तो अभी तक ज़रा सा भी संयम नहीं देखा है। आप मन में मानते ज़रूर हो कि हमने थोड़ा बहुत संयम तो किया होगा। संयम तो संयम ही कहलाता है। एक तरफ दोष हो रहा होता है और दूसरी तरफ जागृति तैयार ही रहती है। सिर्फ संयम में ही रहता है। पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) और आत्मा दोनों अलग ही हो गए होते हैं।

सच्चा संयम आत्मा की हाज़िरी में उत्पन्न होता है। खुद के स्वरूप की प्रतीति बैठे, तभी से सच्चे संयम में आता है। उसके बाद ही खुद के दोष दिखते हैं और उनके प्रतिक्रमण करे वह सच्चा संयम है।

अहंकार से होनेवाला त्याग वह नहीं है संयम

यह संयम तो भगवान का शब्द है। संयम का अर्थ अभी लोग कहाँ से कहाँ ले गए हैं! भगवान की भाषा का शब्द एकदम निचली कक्षा में ले गए हैं। भगवान की निश्चय भाषा व्यवहार में ले आए हैं। अभी लोग जिसे संयम कहते हैं, वास्तव में वह संयम नहीं कहलाता। इसे तो 'कंट्रोल किया' कहा जाता है। इंसानों का 'कंट्रोल' कम होता है, इसलिए उन्हें 'कंट्रोल' करना पड़ता है। सभी जानवर कंट्रोलवाले हैं, सिर्फ इंसान ही 'डिकंट्रोल'वाले हैं। उन्हें खुद का भान ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यदि समझकर हम 'कंट्रोल' में रहें, तो वह संयम है?

दादाश्री : ये सब 'कंट्रोल' में रहते हैं, 'आउट ऑफ कंट्रोल' (असंयमी) नहीं हो जाते, वह संयम नहीं कहलाता।

संयम तो अलग ही वस्तु है। वे संयमधारी कहलाते हैं! जिसे यमराज नहीं पकड़े, उन्हें संयमी कहते हैं! संयमधारी का भगवान ने बखान किया है। संयमधारी के तो दर्शन करने पड़ते हैं! जिन्होंने यमराज को वश में किया है!

प्रश्नकर्ता : यमराज को वश में किया है, वह किस तरह?

दादाश्री : यमराज वश हो चुके हैं, ऐसा कब कहा जाएगा कि जिसे मृत्यु का डर नहीं लगता हो, 'मैं मर जाऊँगा, मैं यमराज के कब्जे में हूँ', ऐसा नहीं लगता हो, वह संयमधारी कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : आपने संयम का जो अर्थ किया (बताया) वह तो उत्तम है, लेकिन जगत् संयम का अर्थ कुछ और ही करता है।

दादाश्री : क्या करता है ?

प्रश्नकर्ता : कुछ कंट्रोल करना, खुद की वृत्तियों पर कंट्रोल करना, ब्रह्मचर्य में आना, वह भी संयम हुआ।

दादाश्री : लेकिन वह हठयोग है। वह, सिर्फ मन से ज़ोर लगाता है, सिर्फ अहंकार करता है। संयम तो अलग ही दिखना चाहिए। जो अहंकार से किया जाए, वह तो त्याग है।

भगवान ने विषयों के संयम को त्याग कहा है, सिर्फ कषाय के संयम को संयम कहा है। क्रोध-मान-माया-लोभ का संयम हो, उसे संयम कहते हैं। कषायों के संयम से ही यह (संसार से) छूटता है, असंयम से तो बंधन है।

कषायों के संयम को कहा संयम

यह त्याग है वह तो वस्तुओं का त्याग है, लक्ष्मी का त्याग है, विषयों का त्याग है, उसमें तो ना नहीं कह सकते लेकिन उसे त्याग कह सकते हैं। त्यागियों का पद भी अच्छा है, लेकिन वे संयमी नहीं कहे जा सकते। संयमी तो, लोग उन्हें कहते हैं कि ये संयमी हैं। लोगों को यह समझ ही नहीं है कि संयम का अर्थ क्या है? वह भगवान की भाषा का संयम नहीं कहलाता। ऐसा त्याग करते हैं उन्हें संयमी नहीं कहते, त्यागी कहते हैं।

‘ज्ञानी’ और त्यागी में इतना ही फर्क है कि ‘ज्ञानी’ संयमी होते हैं और त्यागी नियमी होते हैं। ‘ज्ञानी’ के अलावा और कहीं संयम नहीं होता। और ये जो अन्य हैं, वे त्यागी कहलाते हैं। त्यागी नियमधारी कहलाते हैं और ज्ञानी संयमधारी कहलाते हैं। ज्ञानी के अलावा और किसी को संयमधारी कह ही नहीं सकते।

त्याग-यम-नियम

ये जो त्याग-व्याग करते हैं, वे तो त्यागी पुरुष कहलाते हैं। त्यागी पुरुष सारे यम-नियम में आ जाते हैं। (पाँच महाव्रत के बजाय) पाँच यम

और पाँच नियम में होते हैं। त्यागी नियम में होते हैं कि इतने बजे आहार लेने जाना है, इतने बजे खा लेना है, इतने बजे उठ जाना है। सबकुछ नियमबद्ध होता है। उसमें भी सभी नियमों का पालन तो वे करते ही नहीं।

नियम मतलब उस समय उनका मन उसी के अनुसार कार्य करता है, नियम के अधीन है। आप हर प्रकार से नियम में आ गए हो या थोड़ा-बहुत कच्चा है ?

प्रश्नकर्ता : हर प्रकार से नहीं।

दादाश्री : अच्छा ? (ऐसा ?) तो फिर संयम तो देखा ही नहीं होगा न? क्रोध-मान-माया-लोभ अभी हैं या चले गए ?

प्रश्नकर्ता : क्रोध, लोभ और ऐसा सबकुछ है ही न, साहब हम में।

दादाश्री : जो नियम में नहीं होते, वे यम में होते हैं और जो यम में नहीं होते, वे बेकार हैं।

प्रश्नकर्ता : यम किसे कहते हैं, दादाजी ?

दादाश्री : यम अर्थात नियम में आने की इच्छा। जब से नियम में आने की इच्छाएँ उत्पन्न होने लगे, तभी से यम में आ गया कहलाता है। भावना होती है कि मुझे ऐसा करना है, वैसा करना है। जितना नियम में नहीं रह सकते, उतना सब यम में आता है। नियम में रह सकें, उसके बाद नियम कहलाता है, तब तक नियम कैसे कह सकते हैं? आपकी ऐसी भावना होती है कि मुझे ऐसा करना है, वैसा करना है, मुझे नियम का पालन करना ही है। और जब वह नहीं कर पाते, तब वह सब यम में आता है। और नियम में आ गया यानी कि ज्ञानीपुरुष ने कहा है कि दिन में एक बार वाणी पढ़नी है। तो नियम अनुसार पढ़ता है। एक भी दिन खाली नहीं जाए, तो वह नियम में आ गया।

नियम में आ गया इसलिए फिर संयम की

इच्छा होती है। हाँ, लेकिन संयम आएगा कैसे? संयम तो, आत्मा प्राप्त किए बिना नहीं रह सकता। जब तक आत्मा प्राप्त नहीं हो जाता तब तक सम्यक् दृष्टि भी नहीं हो सकती। तब तक संयम नहीं है।

संयमधारी को नहीं बँधते कर्म

संयम तो बहुत बड़ी चीज़ है। संयम में आ गया तो वह भगवान का पुत्र कहलाता है। संयम आ गया मतलब सबकुछ आ गया। यम-नियम छूट गए और संयम आ गया अर्थात् किनारा आ गया।

संयमी और भगवान के बीच दूरी नहीं होती। और जब से संयम में आ गए, तब से हमें समझ लेना है कि (कारण) मोक्ष हो गया और कर्म बँधने रूक गए। संयमधारी को कर्म नहीं बँधते और यदि कर्म बँधें तो वह संयमधारी नहीं है।

जो कर्म नहीं बँधे, वह संयमी। फिर भी क्रमिकमार्ग के अनुसार संयमी कर्म बँधता है, फिर भी कैसा? कषाय रहित दशा होती है, मंद कषाय दशा होती है। जो कषाय किसी को दिखें नहीं, किसी का नुकसान न पहुँचाएँ, ऐसे मंद कषाय होते हैं। लेकिन कषायों का संयम ही संयम कहलाता है।

जहाँ कषाय वहाँ नहीं है संयम

संयम तो किसे कहा जाता है? क्रोध-मान-माया-लोभ पर जितना कंट्रोल आया, उसे संयम कहते हैं।

क्रोध-मान-माया-लोभ, पर संयम रखे, कंट्रोल (नियंत्रित) करे। संपूर्ण कंट्रोल रहे। कंट्रोल किसे कहते हैं? कि किसी को भी दुःख न हो, खुद के क्रोध-मान-माया-लोभ से सिर्फ खुद पर ही असर होता हो, अन्य किसी को किंचित मात्र दुःख नहीं होता हो, उसे संयम कहते हैं। यहाँ से लेकर क्रोध-मान-माया-लोभ संपूर्ण रूप से समाप्त हो जाएँ, वहाँ तक संयम कहलाता है। और जो किसी के साथ खुले (कषाय) करते हैं जैसे कि यदि

कुत्ता भौंकता हो तो उसका पता चल जाता है न हमें? वैसे ही अगर इंसान के क्रोध का हमें पता चल जाए, तब तो फिर वहाँ पर संयम है ही नहीं न। लोभ का पता चल जाता है। लोभ का पता नहीं चल जाता? आपको पता चल जाता है न कि ये लोभी हैं? अतः संयम किसे कहते हैं, समझ गए न आप? संयम का अर्थ सही तौर पर समझना चाहिए न?

क्रोध-मान-माया-लोभ पर संयम रहे, उसे संयम कहते हैं। अर्थात् क्रोध-मान-माया-लोभ पर संयम रखना क्योंकि पूरा जगत्, जीवमात्र क्रोध-मान-माया-लोभ से बँधा हुआ है और वे कषाय ही उसे निरंतर दुःख देते हैं। भगवान कोई अन्य किसी भी प्रकार का दुःख नहीं देते। वे कषाय किस चीज़ का फल है? (अज्ञानता से बँधे हुए) उसके कर्म के उदय का फल है।

संयम से बरते समाधि

संयम तो, कषाय की हाज़िरी में रहना चाहिए, उसे भगवान ने संयम कहा है। मन-वचन-काया की असंयम दशा में संयम रखना, उसे संयम कहते हैं। क्रोध-मान-माया-लोभ की शुरूआत से ले कर उनका अंत होने तक, वह सारा संयम कहलाता है। तेरह सौ रानियों के होते हुए भी भरत राजा को संयम रहा था। 'संयम' तो चीज़ ही अलग है। जिन में मेरापना न हो, बोलते तो हैं कि यह मेरा है, लेकिन मेरापना नहीं होता। यह आपकी समझ में आता है? (ऐसे संयम से फिर निरंतर समाधि बरतती है)। समाधि किसे कहते हैं? उपाधि (बाहर से आनेवाला दुःख) में भी समाधि रहे, उसे वास्तविक समाधि कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : उपाधि में समाधि?

दादाश्री : हाँ। यदि कुत्ता भूखा हो और उसे दो-तीन रोटियाँ दे दी हों तो फिर उसे पूरी रात समाधि ही रहेगी न, उपाधि नहीं होगी। इसे कुत्ते की समाधि कहते हैं। (यह तो) उपाधि में समाधि रहनी

चाहिए। भयंकर उपसर्ग में भी संयम रहना चाहिए, उसे संयम कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : भयंकर उपसर्ग में भी संयम रहे, वास्तव में वह संयम है ?

दादाश्री : हाँ। उपसर्ग में संयम। वर्ना, इस देह के संयम तो सारे उदयाधीन हैं, उन्हें संयम नहीं कहते। मन का संयम स्वाधीन है। वही संयम की शक्ति है। उपसर्ग आ जाए (कोई धौल मार दे), उस वक्त ज्ञान हाज़िर रहे और बिल्कुल (एकदम) आनंद भाव से धौल खा ले। वर्ना फिर भी घौल खानी तो पड़ेगी ही न? पूरा जगत् रोकर (रोते हुए) खाता है। रोते हुए तो पूरा जगत् खाता है या नहीं? कितने ही भाग जाते होंगे, ऐसा लगता है ?

प्रश्नकर्ता : कोई नहीं भाग सकता।

दादाश्री : कोई नहीं भाग सकता, है न? कर्म के नियम को वे रोते हुए भुगतते हैं और ज्ञानी हँसते हुए भुगतते हैं। आपकी समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : अर्थात्, इस बाह्य त्याग को संयम नहीं कहलाता। संयम तो कषायों को समतापूर्वक सहन करना, कषायों को संयमपूर्वक देखना, आनंद से उन्हें (सहन) करना, उसे संयम कहते हैं। विषम संयोगों में संयम रखना, उसे संयम कहते हैं।

कषाय रहित दशा, वही संयम

सामनेवाले के कषायी व्यवहार में अकषायी रहना, उसे संयम कहते हैं। यदि आपके साथ कोई एक व्यक्ति कषायी हो जाए तो उस वक्त आप अकषायी भाव से रहो, तो भगवान ने उसे संयम कहा है। उस अलौकिक संयम से मोक्ष होगा।

बाकी (और) यह लौकिक संयम अर्थात् कषायों की हाज़िरी में जो अन्य त्याग किए होते हैं न, उसे संयम कहते हैं। भगवान की भाषा में

उसे (संयम) नहीं मानते। और वह तो व्यवहारिक (संयम) कहलाता है। संयम तो, कषायहीन को संयम कहते हैं। ऐसा संयम अच्छा लगेगा या नहीं लगेगा ?

प्रश्नकर्ता : हाँ। ऐसा संयम ही चाहिए, दादाजी।

आत्मा स्वरूप होकर समझने की ही ज़रूरत है

दादाश्री : भगवान महावीर क्या करते थे? उनका तरीका क्या था? यदि किसी व्यक्ति ने दो-तीन पत्थर मारे और यहाँ खून निकल गया, तो फिर वह खुद आत्मस्वरूप से मन को क्या (कैसे) समझाते थे? कि 'तीन पत्थर मारे लेकिन छुरे से यदि एक कान काट लेते तो क्या हालत होती? इसके बजाय यह ठीक है,' कहते थे। ऐसा सिखाते थे। यदि कान काट लिए हों तब, 'अरे! यदि हाथ काट लिए होते तो क्या करते? इसके बजाय कान काटकर ले गए, भाई! ये कट गए।' उन्होंने ऐसा तरीका अपनाया था। आपकी समझ में आया यह तरीका ?

प्रश्नकर्ता : हाँ!

दादाश्री : यदि हाथ काट लिए हों तब कहते, 'पैर तो हैं न!' हाथ और पैर दोनों काट लिए हों तब कहते, 'मैं जीवित तो हूँ न!' ऐसे ठेठ तक अवलंबन ढूँढते हैं, ऐसा है यह तरीका।

जबकि लोग तो एक ज़रा सी मार पड़े तो शोर, कलह कर देते हो। तो संयम कैसे आएगा? संयम लाना है, तो विस्तृत समझ होनी चाहिए। हाँ। 'दो हाथ काट दिए लेकिन मेरे पैर तो हैं न मेरे?' अर्थात् मन को संतुष्ट करने का साधन होना चाहिए।

जहाँ आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं, वहाँ संयम

मिथ्यात्व (क्रोध-मान-माया-लोभ) पर संयम रखना, उसे संयम कहते हैं। ये तो खुले आम मिथ्यात्व भी करते रहते हैं और क्रोध-मान-माया-लोभ भी करते रहते हैं, खुले आम। यदि मिथ्यात्व चला जाए, उसे भी भगवान संयम नहीं कहते। फिर भी वह

दादावाणी

संयम नहीं कहलाता। संयम तो, क्रोध-मान-माया-लोभ के खत्म होने तक यदि अविरत समकित रहे तो मिथ्यात्व चला जाता है लेकिन संयम नहीं। समकित होने पर भी भगवान ने उसे संयम नहीं माना है।

संयम तो, जब रौद्रध्यान और आर्तध्यान बंद हो जाएँ, उसे भगवान ने संयम कहा है।

अपने इस अक्रम विज्ञान, के आधार पर आर्तध्यान व रौद्रध्यान चले जाते हैं, उसे संयम कहते हैं। जब आर्तध्यान व रौद्रध्यान न हों, उसे संयम कहते हैं।

अपने महात्माओं को रौद्रध्यान व आर्तध्यान नहीं होते। किसी पर गुस्सा तो हो जाते हैं लेकिन आर्तध्यान व रौद्रध्यान नहीं होता। जिनके रौद्रध्यान और आर्तध्यान बंद हो गए, उन्हें (महात्मा) संयमी कहते हैं। भगवान के संयम जैसा।

अगर चंदूभाई को कोई गाली दे तो तुरंत ही आपके अंदर संयम परिणाम उत्पन्न हो जाते हैं न? गाली देते ही तुरंत संयम परिणाम, असंयम नहीं होता। जब गाली दे तब जगत् को क्या होता है? रौद्रध्यान उत्पन्न हो जाता है। और आपको क्या होता है? संयम परिणाम खड़े हो जाते हैं। यानी निरंतर संयम परिणाम रहता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यह जो निरंतर संयम परिणाम है, यही मोक्ष तक ले जाने का (साधन) है। जबकि (लौकिक में) आँखों से दिखाई देनेवाले संयम को संयम माना जाता है। लाखों लोग उन्हें संयमधारी कहते हैं और आपको एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं कहता।

यह (ज्ञान की) लाइट हुई है, उस आधार पर संयम परिणाम रहता है। सभी महात्माओं को निरंतर, चौबीसों घंटे संयम परिणाम रहता है। आप (मुमुक्षु) यदि इन्हें (महात्माओं को) गालियाँ दो, तो तुरंत ही

उन्हें संयम परिणाम उत्पन्न हो जाता है। वह संयम ही होता है।

प्रश्नकर्ता : यह बात सही है। यहाँ पर ज्ञान ही काम करता है।

दादाश्री : ज्ञान निरंतर काम करता रहता है। एक क्षणभर भी रूके बगैर ज्ञान काम करता रहता है।

जब से संयम में आ गया तभी से अवतारी पुरुष कहलाते हैं। जिनमें संयम होता है, तभी से वे अवतारी कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ये सब जो साधु-संत हैं, वे संयमी पुरुष कहलाते हैं या नहीं?

दादाश्री : संयमी तो कोई है ही नहीं। संयमी पुरुष कहाँ से लाएँगे? इन्हें तो संत कहते हैं। इन संतों की भावनाएँ अच्छी हैं कि लोग कैसे सुधरें और उल्टे रास्ते पर चलनेवाले सीधे रास्ते पर आ जाएँ। वे भावनाएँ बहुत अच्छी हैं, लेकिन संयम कहाँ से होगा वहाँ? संयम कोई लड्डू खाने का खेल नहीं है।

आंतरिक संयमी, वह महात्मा

प्रश्नकर्ता : महात्मा किसे कहते हैं?

दादाश्री : जिसके अंदर संयम, आंतरिक संयम रहे उसे महात्मा कहते हैं। बाह्य संयम तो हो भी सकता है या नहीं भी। जब तक कषाय करे, तब तक महात्मा नहीं कहा जा सकता। जिसमें आंतरिक संयम हो, वह महात्मा है। आंतरिक संयम अर्थात् चंदूलाल क्रोध करे लेकिन खुद अंदर से, भीतर मना करता रहे। 'अरेरे, ऐसा क्यों हो रहा है, क्यों हो रहा है?' ऐसा रहता है उसे। उसे आंतरिक संयम कहते हैं, उसे महात्मा कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : महात्मा की कार्यवाही क्या होती है?

दादाश्री : ये जो पिछले जन्म का सारा माल भरा हुआ है, उसे समतापूर्वक जाने देना।

आज्ञा पालन से उपजे, संयम परिणाम

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपके महात्माओं को भी थोड़ा-थोड़ा संयम ही रहता है न, संपूर्ण संयम तो नहीं रहता न?

दादाश्री : ऐसा है न, मेरी दृष्टि से तो पूर्ण संयम ही है, लेकिन उन्हें समझ में नहीं आता। यदि सत्तर प्रतिशत मेरी आज्ञा का पालन करे तो उनका संयम पूर्ण ही है। सत्तर प्रतिशत, सौ प्रतिशत नहीं! क्योंकि यह विज्ञान अलग ही प्रकार का है। सत्तर प्रतिशत पालन करे तभी से भगवान बन जाता है। बाद में बीवी-बच्चे वगैरह तो *निकाल* (निपटारा) करने की चीज़ हैं उनके लिए यह ग्रहणीय नहीं है। त्याग भी *वळगण* (जो जकड़ ले, बंधन) है और ग्रहण भी *वळगण* है! *निकाल* करने से बंधन नहीं रहता। त्याग होता है न! उस त्याग और *निकाल* में फर्क है या नहीं? क्या फर्क है? बताइए।

त्याग सफल, व्रत अफल

प्रश्नकर्ता : त्याग अर्थात् हम मन से समझकर किसी भी चीज़ का त्याग करना। और *निकाल* अर्थात् बुद्धि से हम अच्छे-बुरे का विचार करने के बाद *निकाल* करना।

दादाश्री : त्याग किसे कहते हैं। अपने यहाँ कहावत है, 'त्यागे इसकु आगे'। यदि किसी ने यहाँ पर एक पत्नी का त्याग किया तो फिर देवगति में और ज़्यादा अच्छी पत्नियाँ मिलती हैं। यानी आप जो कुछ भी छोड़ते हो, उससे पुण्य बँधता है व ज़्यादा मिलता है।

जो तुझे बहुत ही पसंद है और यदि तू उसका त्याग करे तो आगे जाकर सौ गुना मिलेगा। भगवान ने त्याग को सफल कहा है और व्रत को अफल कहा है। त्याग यानी किसान अनाज का त्याग करके खेत में बोता है, उसे भगवान ने त्याग कहा। त्याग फल सहित है। सफल है जबकि व्रत अफल है। यदि व्रत

है तो तू मोक्ष में जाएगा। त्याग है तो मोक्ष में नहीं जाएगा। त्याग तो संसार ही खड़ा कर देगा। और यह *निकाल* का मतलब लेना भी नहीं और देना भी नहीं। *निकाल* कर दो भाई। अब लेना-देना नहीं रहा। इसलिए यह अक्रम विज्ञान अलग प्रकार का है। *निकाली* बाबत का 'त्यागे सो आगे' नहीं होता, कुछ भी नहीं।

प्रश्नकर्ता : अपने एक महात्मा हैं, उन्होंने ज्ञान लिया है और अब उन्हें अलौकिक के भाव होते हैं। तो इन अलौकिक के भाव का परिणाम अभी आया या भविष्य में आया?

दादाश्री : वह अभी भी मिलेगा और भविष्य में भी मिलेगा, दोनो मिलेंगे। भाव के परिणाम प्रेश भी होते हैं और भविष्य में भी होते हैं। भविष्य में प्रकृति बाँधकर मिलेगा और अभी उसके प्रकाश की रोशनी मिलती है। हमने ज्ञान दिया, उसके बाद मनुष्य शांत नहीं हो जाता?

प्रश्नकर्ता : बहुत! बहुत! हाँ!

दादाश्री : वह भाव का परिणाम है।

प्रश्नकर्ता : इतना ही नहीं, रूचि भी पूरी तरह से बदल जाती है, दादाजी।

दादाश्री : हाँ। सब बदल जाता है।

भेद, यम-नियम-संयम के बीच

आपको (महात्माओं को) आत्मा का भान है और अब आप जिस भाव से आज्ञा में रहते हो, अरे! पाँच में से एक ही आज्ञा का पालन करते हो, फिर भी मैं कहता हूँ कि आप संयमधारी कह सकते हैं! यदि कोई आपके साथ लड़ने आए न, तो आपका मन तुरंत पीछे हट जाएगा। यदि ज़ेब कट जाएगी तो भी मन पीछे हट जाएगा। तुरंत संयम उत्पन्न हो जाएगा। और ये जो बाहर हैं (ज्ञान नहीं लिए हुए) वे नियमधारी हैं और संसार के लोग नियम में आने के बाद यमधारी कहलाते हैं। संसार के लोग कोई

भी, किसी भी नियम का पालन करें, एक नियम पकड़ ले कि मुझे दस बजे भोजन करना है, तो वह यम में आ गया, ऐसा कहा जाता है। दस बजे भोजन कर ही लेता है, भले ही फिर लड्डू खाए या कुछ भी करे लेकिन टाइम (समय) पर कर ले, तो उसे यम कहते हैं। और ये त्यागी नियम में कहे जाते हैं एवं ज्ञानी संयम में कहे जाते हैं।

ज्ञान सहित यम, वही संयम

वास्तविक संयम, जो ज्ञानपूर्वक यम है, वह संयम है और अज्ञानपूर्वक यम, वह नियम है। ये यम और नियम दोनो हैं। साधु नियमी कहे जाते हैं। नियमानुसार यानी नियम में ही रहते हैं। नियम तो उनका कहा जाता है कि कुछ बातों में नियम होते ही हैं।

वह रिलेटिव ज्ञान है। वह रियल वस्तु है ही नहीं। वह रिलेटिव है। इसलिए हमारी यह नई बात समझने में उन्हें बहुत वक्त लगता है कि भाई यह आचार अलग चीज़ है और संयम अलग चीज़ है। आचार तो त्याग से संबंधित है, वह संयम से संबंधित नहीं है। त्यागी के त्यागवाले आचार होते हैं और गृहस्थ के गृहस्थीवाले आचार होते हैं। यदि आचार, विचार और वाणी पर संयम है, वाणी पर कंट्रोल करे, मन पर कंट्रोल करे, आचार पर कंट्रोल करे, तो भी वह संयम तक नहीं पहुँच सकता। अतः यह (अक्रम ज्ञान) संयम स्वरूप है।

फर्क, क्रम व अक्रम के संयम में

प्रश्नकर्ता : क्रमिक मार्ग के संयम और अक्रम मार्ग के संयम, में क्या फर्क है ?

दादाश्री : अपने (हमारे) यहाँ तो इन पाँच आज्ञा का ही पालन करना है न! अपने यहाँ आज्ञा समभाव से *निकालवाली* होती है और उस (क्रमिकमार्ग की) आज्ञा को तो पकड़कर रखना पड़ता है।

यह ज्ञान मिले तब शुद्धात्मा होने के बाद अब आप संयमी कहलाओगे। लेकिन (क्रमिक के) लोग कबूल नहीं करेंगे। लोग तो कहेंगे, वेश नहीं बदले, बीवी है, ऐसा है, वैसा है, बहाने बनाएँगे सभी। लेकिन अपने महात्माओं को निरंतर संयम रहता है। मतलब आंतरिक संयम रहता है, बाह्य संयम नहीं। इन पाँच आज्ञाओं का पालन करते हो उसमें आपको निरंतर आंतरिक संयम रहता ही है। वह संयम मोक्ष की ओर ले जाएगा और बाह्य संयम भौतिक सुख देता है। दोनों संयम हितकारी हैं, लेकिन इससे भौतिक सुख का लाभ मिलता है और वह मोक्ष देता है। अंदर का संयम रहे, बाहर का न भी हो तो उसमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन अगर बाह्य संयम हो और अंदर नहीं हो तो हर्ज है। ऐसा होता नहीं है, नहीं तो बाह्य संयमधारी को कुछ फायदा नहीं होता अंतर संयम से मोक्ष, बाह्य संयम से संसार है। सोने की बेड़ी जैसा!

विपरीत प्रसंगों में बरते संयम

अपने यहाँ एक बार मुंबई से भादरण बस आनेवाली थी, मुंबईवाले दर्शन करने के लिए भादरण आनेवाले थे इसलिए बस की थी। कितने बजे आई थी ?

प्रश्नकर्ता : यों तो पाँच बजे का टाइम कहा था।

दादाश्री : सब से कहा था पाँच बजे। इसलिए सब जल्दी उठकर चाय-पानी पीकर नहा-धोकर आए थे। फिर ?

प्रश्नकर्ता : बस साढ़े ग्यारह बजे आई।

दादाश्री : बस साढ़े ग्यारह बजे आई लेकिन उन पचास लोगों पर कोई असर नहीं हुआ। कोई फरियाद नहीं, शोर नहीं, शिकायत नहीं, मुँह भी नहीं बिगड़े, जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। कोई शिकायत या शोर था बाद में ?

प्रश्नकर्ता : नहीं। आनंद था।

दादाश्री : भादरण आकर सब मुझ से कहने लगे, कहते हैं हमारी ज्ञातिवाले होते तो सब शोर मचा देते। वे लड़ाई झगड़ा कर देते। इन पर तो कोई असर ही नहीं हुआ। अपने यहाँ हर एक प्रसंग में ऐसा ही हुआ है, हर एक प्रसंग में कोई असर ही नहीं होता।

महात्मा संयमी, पुरुषार्थ सहित

उसे धर्म कहते हैं। वास्तव में धर्म की शुरूआत कब होती है? संयम। संयम होने के बाद धर्म की शुरूआत होती है।

ज्यादातर अपने सभी महात्मा संयमी हैं। थोड़े बहुत ज़रा कमज़ोर होंगे।

प्रश्नकर्ता : सब आपकी आज्ञा में ही रहते हैं न!

दादाश्री : हाँ, आज्ञा में रहते हैं। आज्ञा के विरुद्ध नहीं जाते।

वे भले ही, अभी ऐसे दिखाई देते हैं लेकिन फिर भी वे दर्शन करने योग्य हैं। और अगर यह समझ में न आए तो क्या हो सकता है? संयमी मतलब गालियाँ देने पर फिर भी उनका चेहरा नहीं बिगड़ता। और यदि बिगड़ भी जाए तो थोड़ी देर बाद सुधर जाता है। अतः ये संयमी पुरुष कहलाते हैं, पुरुषार्थ सहित हैं।

पाँच आज्ञा, वह अंतर संयम

अपने महात्माओं का संयम कैसा है कि (संपूर्ण) ज्ञान में नहीं रह पाएँ लेकिन पाँच आज्ञा में रहने का प्रयत्न करते रहें, वह संयम कहलाता है। हम ज्ञान में रहें तो क्रोध-मान-माया-लोभ रुक जाएँगे।

हमारी पाँच आज्ञा, वे संपूर्ण अंतर संयम ही हैं! यानी यदि संपूर्ण आदर्श तरह से पाली जा सकें तो, वर्ना फिर वे जितनी कम पाली जा सकें उतनी

आदर्शता कम। इसीलिए इन सभी को अंदर संयम रहता है न! किसी भी फाइल के साथ समभाव से *निकाल* ही करते हैं। समभाव से *निकाल* करने के लिए कितना संयम रखना पड़ता होगा? यह अंतर संयम निरंतर रहेगा!

आपको दिन में कितनी बार *समभाव से निकाल* करना पड़ता है? फाइलें आती हैं, समभाव से *निकाल* करनेवाली?

प्रश्नकर्ता : हाँ कोई आती भी है, कभी ऐसे मौके आ जाते हैं।

दादाश्री : लगभग तो उनका *निकाल* हो ही जाता है, लेकिन यदि किसी का नहीं हो तो हर्ज नहीं है, आपको चिंता भी नहीं करनी है। आपको तो इतना ही देखना है कि आज्ञा का पालन किया या नहीं। अर्थात् इन पाँच आज्ञा का पालन करते हो, उसमें समभाव से *निकाल* करने की आपकी इच्छा है न? क्या इच्छा है?

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल*।

दादाश्री : हाँ। रिलेटिव रियल देखते रहना है। फिर आप व्यवस्थित को स्वीकार करो। व्यवस्थित तो सारा आपकी समझ में आ गया है न? दिनोंदिन तुझे और भी आगे का समझ में आता जा रहा है, है न? लेकिन पूरे दिन जागृति रखनी पड़ती है न? व्यवस्थित है और मैं कर्ता नहीं हूँ, इसकी जागृति रखनी पड़ती है। यह तो निरंतर संयम का मार्ग है।

प्रकृति को अलग देखना, वही संयम

क्षायक समकित अर्थात् निरंतर अंतर संयम रहता है। बाह्य संयम की ज़रूरत नहीं है। चंदूभाई का जो भी माल हो, संयमवाला या असंयमवाला, उसे आप वीतराग भाव से देखो तो वही संयम है। चंदूभाई चिढ़ जाएँ तो उन पर आपको चिढ़ नहीं जाना है, उन्हें देखना है। ज्यादा से ज्यादा 'ऐसा

शोभा नहीं देता, ' ऐसा बोलना है। ऐसा साधारण भाव रखना है, बोलना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ऐसे चिढ़ जाना, वह क्या है?

दादाश्री : वह प्रकृति है, उसे आपको देखते रहना है। वह भी एक संयम है लेकिन खुद को तो ऐसा लगता रहता है कि 'खराब है' वहाँ पर यदि इन आज्ञाओं का पालन करने से संयम उत्पन्न होता है। वह जो संयम है, वही पुरुषार्थ है।

असंयम पर संयम, वह वास्तविक संयम

क्रोध-मान-माया-लोभ चंदूभाई को होते हैं, लेकिन खुद को ऐसा लगता है कि यह नहीं होना चाहिए। स्वरूप की वजह से आपको ऐसा ही लगता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। दोनों क्रियाएँ एक साथ चलती हैं। चंदूभाई क्रोध करते हैं और आपको अंदर ऐसा लगता रहता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। असंयम पर संयम, उसे संयम कहते हैं। इस जगत् के लोगों को क्या होता है? असंयम पर असंयम। बात है छोटी और समझे बगैर सब गलत चलता रहता है।

प्रकृति से अलग अभिप्राय रखने पर बरतता है संयम

संयम मतलब चंदूभाई जो कुछ करें, किसी के लिए अहितकारी हो, ऐसा करें फिर भी आपका अभिप्राय बिल्कुल जुदा ही रहता है। चंदूभाई यदि किसी को गालियाँ दें तो आपका अभिप्राय जुदा ही रहता है कि, 'ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा क्यों कह रहे हो?' मतलब जैसे दो अलग-अलग इंसान हों इस तरह बर्ते तो उसे संयम कहते हैं।

आपको अंदर ऐसा लगता है कि यह किस तरह का है? ऐसा कहीं होता होगा? इससे वह ओपीनियन (मत) एकदम ही अलग पड़ गया। दोनों के बीच डिफरन्स ऑफ ओपीनियन, वही है संयम। और यदि आपका व चंदूभाई का ओपीनियन

एक हो गया, तो वह है असंयम। कभी देखा है ऐसा असंयम?

प्रश्नकर्ता : हाँ। लेकिन यदि दोनों अलग हो जाएँ तो फिर पता चल जाता है।

दादाश्री : अलग रहने से ओपीनियन डिफरन्स हो जाता है।

अब संयम में रहते हो न ठीक से? तो बस! हमें तो संयम चाहिए, बस। संयम से मोक्ष है। चंदूभाई जो करते हैं वह यदि आपको अनुकूल नहीं आए, तो आपका अभिप्राय अलग ही रहता है न! यदि चंदूभाई किसी पर गुस्सा हो जाएँ तो, आपको अच्छा नहीं लगता न? चैन नहीं पड़ता न? वही है संयम। खुद का अभिप्राय प्रकृति से अलग रहे तो उसे संयम कहते हैं।

कुछ लोग (व्यवहार में) जागृत रहते हैं। वे कहते हैं कि 'यह गुस्सा आ जाता है, वह पसंद नहीं है, फिर भी गुस्सा तो करता ही हूँ न, पसंद नहीं है फिर भी करना पड़ता है,' वह सारा यम में आता है और उसे नुकसान नहीं होता। और कुछ लोग सीधा (एकदम) गुस्सा ही करते हैं। कहते हैं, 'गुस्सा किए बगैर तो चलेगा ही नहीं, मेरी गाड़ी बंद हो जाएगी।'

असंयम को देखना, वही संयम

संयमी निरंतर जागृत रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : हमारी जागृति पर्याप्त है या नहीं, इसका पता कैसे चलेगा?

दादाश्री : वह तो हर बार आपको आपका संयम पर से पता चल जाएगा। यदि कोई व्यक्ति आकर चंदूभाई से कहे कि, 'आप इस लड़के को पढ़ाते हो न, वह बहुत ही खराब तरीके से पढ़ाते हो।' यदि आप पर ऐसा ब्लेम लगाए तो, उस समय अगर चंदूभाई वापस उस पर ब्लेम लगाए और आप उसे जानो कि चंदूभाई असंयमी हो गए हैं। जिसे असंयम हो गया है, उसे जो जानता है, वह जाननेवाला

संयमी है। अतः जागृति है या नहीं, उसका पता चल जाता है या नहीं? गाली मिले तो पता चल जाता है कि अंदर जागृति है या नहीं। या फिर यदि अच्छे कपड़े पहनकर शादी में जा रहे हों और रास्ते में कोई कपड़ों पर थूक दे तो उस पर गुस्सा होने के बजाय अंदर जागृति आ जाती है। अगर चंदूभाई उस समय झिड़क दें, तो भी अंदर से ऐसा होता है कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए।' वह जो जागृति है और वही संयम है। असंयम को देखना, वही संयम है!

आजकल बाहर और जगहों पर जो संयम करते हैं न, वह तो बाल संयम है। बाल संयम जो समझ रहित संयम होता है। जब उन्हें कुछ बुरा कहते हैं न, तो वे फन फैलाते हैं। फन तो अपने महात्मा भी फैलाते हैं, लेकिन तुरंत समझ जाते हैं कि 'यह गलत हो रहा है।' जबकि बाहरवाला आवेश में आने के बाद मन में क्या कहता है, 'उसे तो मुझे कहना ही पड़ेगा'। ऊपर से बुद्धि ऐसे दो गुना कर देती है। आप तो गलत हैं ऐसा मानते हो, जबकि वह क्या करता है? दो गुना कर देता है। उससे असंयम गुणा असंयम उत्पन्न होता है।

यदि आपसे कोई कुछ कहे, तो आपको (शुद्धात्मा) तो कोई पहचानता नहीं है इसलिए नहीं कहेगा, चंदूभाई से कहे तो आपको संयम में रहना चाहिए। और यदि डिप्रेस हो जाएँ तो चंदूभाई से कहना चाहिए कि भाई, 'आपकी भूल होगी इसलिए कहा होगा, तो डिप्रेस क्यों हो रहे हो? यदि आपकी भूल नहीं होगी तो उसकी जिम्मेदारी है, आपकी जिम्मेदारी नहीं है।' ऐसा कहोगे तो चंदूभाई का ऑलराइट हो जाएगा।

संयम परिणाम से ही मोक्ष

प्रश्नकर्ता : कोई भी फाइल आ जाए और उसका समभाव से *निकाल* करें तो इसके परिणाम स्वरूप क्या संयम परिणाम उत्पन्न होता है?

दादाश्री : हाँ, उसी का परिणाम है संयम।

समभाव से *निकाल* करना है, तभी से संयम परिणाम में आ गए, फिर आधा संयम रहे तो अर्ध संयम। सामनेवाले ने दो धौल मार दी तो इसने एक मार दी लेकिन तुरंत पता चल गया न कि यह गलत हो रहा है, उसे अर्ध संयम कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : मतलब जब से नक्की करें कि फाइलों का समभाव से *निकाल* करना है.....

दादाश्री : तभी से संयम की शुरूआत हो गई।

मेरे इन पाँच वाक्यों (आज्ञा) को पकड़ ले तभी से संयम शुरू हो गया, बाद में अर्ध संयम में आए या फिर पूरा संयम आए, लेकिन परिणाम संयमवाले आए और संयम परिणाम से ही मोक्ष है। यह जो निरंतर संयम परिणाम है, वही मोक्ष में ले जाने का साधन है।

हिंसकभाव का अभाव, वही संयम

गाड़ी में जाते हुए कोई परेशान करे तो भी आप समभाव से *निकाल* कर लेते हो। चंदूभाई शायद उसे कुछ कह दे, लेकिन आप क्या करते हो? समभाव से ही *निकाल* करते हो। आप अलग, चंदूभाई अलग। लगभग तो चंदूभाई कुछ कहेगा ही नहीं और शायद कुछ कह भी दे तो उसके पीछे हिंसकभाव नहीं है न, यानी कि संयम में रहता (होता) है। संयमधारी का चेहरा देखें तो पाप धुल जाते हैं।

अपने महात्मा संयमी हैं, उसके लिए मैं मना नहीं करता। क्योंकि इन लोगों से जब क्रोध हो जाता है न, उस घड़ी अंदर पछतावा होता है। वास्तव में वह क्रोध नहीं है। पछतावा होता है इसलिए क्रोध नहीं है। जब गुस्सा आता है तब अंदर पछतावा होता है।

प्रश्नकर्ता : क्या बाहर के लोगों को पछतावा नहीं होता होगा?

दादाश्री : वह पछतावा अलग प्रकार का होता

है, लेकिन वह क्रोध हिंसकभाव वाला है। खुद जले और सामनेवाले को भी जला दे, ऐसा क्रोध है। जबकि इसमें हिंसक भाव नहीं होता।

वहाँ हल लाओ, प्रतिक्रमण से

क्रोध दो प्रकार के: एक *निकाली* क्रोध और एक ऐसा सच्चा क्रोध जो *निकाली* नहीं है। *निकाली* क्रोध मतलब जिसमें से जान निकल गई है जबकि दूसरा जानवाला! आपको क्रोध आने के बाद अंदर ऐसा नहीं होता कि ऐसा नहीं होना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बहुत पछतावा होता है कि यह गलत हो गया।

दादाश्री : वह जो होता है वहाँ संयम हो रहा है और यह उसका बाहर का हिस्सा, यह भूमिका अदा करता है। उस पर आप संयम कर रहे हो कि ऐसा नहीं होना चाहिए। बाहर का हिस्सा तो अपने आप जो है वह निकलता रहता है, टँकी में जो माल है, वह। तब वह खुद को तो अच्छा नहीं लगता, इसलिए वह कहता है कि, 'ऐसा नहीं होना चाहिए, यह शोभा नहीं देता!'

संयम हो तभी *निकाली* कहलाता है, वर्ना *निकाली* कहलाएगा ही नहीं न! संयम पहले होता है, उसके बाद *निकाली*। संयम के बिना तो मोक्ष होता ही नहीं न! संयमपूर्वक ही *निकाल* होता है। जिसमें *निकाल* शब्द हो तो जानना कि यह संयम से कर रहे हैं और उसमें भी सामनेवाले को दुःख हो ऐसा हो तो हमने कहा है कि चंदूभाई से कहना कि, 'भाई, यह सामनेवाले को दुःख हो ऐसा क्यों कर रहे हो? प्रतिक्रमण करो।'

क्रोध का निवारण हो सकता है। क्योंकि निकाली बाबत है वह। इसलिए गुनहगारी नहीं आती लेकिन सामनेवाले को जो दुःख हुआ इसलिए उतना उसका हिसाब चुकता करना चाहिए, उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए।

चंदूभाई असंयम में, आप संयम में

भगवान ने कहा था, 'जहाँ देहाध्यास है वहाँ संयम नहीं है।' संयम हो वहाँ देहाध्यास नहीं होता। फिर भी देखिए न, आज संयम की कौन-सी भाषा चल रही है!

प्रश्नकर्ता : ज्ञाता-दृष्टा में रहें तो क्या वह संयम कहलाता है?

दादाश्री : नहीं। ज्ञाता-दृष्टा में रहना, वह संयम नहीं, वह ज्ञान कहलाता है। ज्ञाता-दृष्टा में रहना मतलब वह अंतिम पद, ज्ञान कहलाता है। और संयम यानी क्या? आर्तध्यान-रौद्रध्यान रुक जाएँ, उसे संयम कहते हैं। देहाध्यास को भगवान ने संयम नहीं कहा है। भगवान इसे संयम नहीं मानते। जब देहाध्यास न रहे, तब संयम रहता है।

यह तो वे खुद ही कहते हैं कि देहाध्यास को हम मानते हैं, लेकिन वे देहाध्यास शब्द नहीं बोलते। वे क्या बोलते हैं? 'अशुभ छोड़िए और शुभ कीजिए।' शुभ करना, वह देहाध्यास है। बल्कि देहाध्यास बढ़ाया। वह जो कम था, उसे बढ़ाया? अब यह सब समझ में नहीं आता न? किस तरह समझ में आएगा एट ए टाइम? यह तो घड़ीभर में ज्ञानीपुरुष की दृष्टि तो कहाँ से कहाँ देख लेती है। प्लस-माइनस करके मूल जगह पर आ जाती है। क्योंकि दृष्टि निर्मल हो चुकी है। इनमें तो ज़रा-सा भी संयम नहीं न, फिर भी लोग कहते हैं कि संयमी आए। क्योंकि वह लौकिक संयम है। लोगों का माना हुआ, ऐसे संयम को भगवान ने स्वीकार नहीं किया है। ऐसा भगवान भी स्वीकारते हैं कि हमारे महात्मा सभी संयमी हैं। क्योंकि गुस्सा आता है और संयमी भी रहता है। असंयम में भी संयम रहता है!

प्रश्नकर्ता : कई पूछते हैं कि आचरण में कहाँ फर्क आया?

दादाश्री : आचरण में देखना नहीं है। यदि

असंयम हो तभी हम संयम को देख सकते हैं कि यह संयम से बाहर गया। ऐसा लगता है आपको कि आप संयम में हैं। चंदूभाई असंयम में हों और आप संयम में रहते हो।

संयम से भी उच्च है समता

प्रश्नकर्ता : दादाजी! संयम और समता में क्या फर्क है?

दादाश्री : समता तो एवरिन्हेर पॉसिबल (हर जगह संभव) और संयम कुछ जगहों पर पॉसिबल (संभव) नहीं भी हो सकता।

प्रश्नकर्ता : संयम कुछ जगहों पर पॉसिबल नहीं होता लेकिन कहीं तो पॉसिबल होगा न? सब जगह नहीं होता, ठीक है।

दादाश्री : जिसने आत्मा प्राप्त किया हो, उसे संयम रहता है। समकित हो गया हो, उसे संयम रहता है। अतः अपने सभी महात्मा संयमी कहलाते हैं, इसमें दो राय नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा के सभी महात्मा संयमी कहलाते हैं, वह बात तो सही है। लेकिन कुछ महात्मा पागलपन भी करते हैं, फिर भी संयमी हैं?

दादाश्री : यदि हमारी आज्ञा का पालन करें तो उन्हें माना जा सकता है!

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो ठीक है लेकिन यदि वे पागलपन करते हैं तो वह तो डिस्चार्ज भाव है न? वह तो भरा हुआ माल है न?

दादाश्री : उससे कोई हर्ज नहीं है, हमारी आज्ञा का पालन करे उसे कुछ भी नहीं।

यदि वह सत्तर प्रतिशत (आज्ञा पालन करता है) तो उसे संयमी कह सकते हैं। उसे यदि भगवान कहना हो तो कह सकते हैं। वह चाहे जैसा भी हो, उसके उस आचरण को देखने की जरूरत नहीं है, आज्ञा में रहनेवाला होना चाहिए।

संयम शक्ति प्राप्त हुई आत्मज्ञान से

अब क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं रहे हैं, ऐसा हमने आपको बना दिया है। भावकर्म अर्थात् आपके सारे कषाय ही नाश कर दिए। अब यदि आपको पुरुषार्थ समझ में न आए तो मार खाओगे। कषायों का नाश हो गया। अब यदि चंदूभाई भी गुस्सा करते हैं तो वह उदयकर्म के अधीन है और अंदर से आप संयम के अधीन। यदि आप कहो कि ऐसा नहीं होना चाहिए मतलब आपके अंदर किसी भी प्रकार का कषाय नहीं है और यह जो उदयकर्म के अधीन है वह *निकाली* चीज़ है। *पूरण* (चार्ज होना) हो चुकी है, इसलिए *गलन* (डिस्चार्ज होना) हो रही है। *गलन* नहीं होने देना भी गुनाह है। इसलिए उन्हें देखकर जाने देना है, तो फिर छूट गए। हम से कहते हैं कि हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत) कषाय चले गए? तब मैं कहता हूँ कि हंड्रेड परसेन्ट चले गए हैं तभी तो चिंता चली जाती है, वर्ना चिंता कभी खत्म नहीं होती। जब तक हंड्रेड परसेन्ट कषाय नहीं चले जाते तब तक किसी की चिंता खत्म नहीं हो सकती। क्रमिकमार्ग के ज्ञानियों को भी अंदर आनंद रहता है और बाहर चिंता होती है।

आपको तो यही देखना है कि चिंता नहीं हो रही है। चिंता नहीं होनी चाहिए, बस। चिंता हुई कि समझ लेना कि अंदर बिगड़ गया। हमें चिंता नहीं होती, क्रोध-मान-माय-लोभ रूपी कमजोरियाँ खड़ी नहीं होतीं। जो कमजोरी खड़ी होती है, वह *पूरण-गलन* की है या आपकी? आपको भरोसा (विश्वास) रहना चाहिए कि आप संयम से बाहर नहीं चले गए हैं। क्षणभर के लिए भी आप संयम से बाहर नहीं चले गए हैं। देह संयम के बाहर जा सकता है, उसके आप ज्ञाता हो।

देखना, न हो ज्ञान का दुरुपयोग

अपने यहाँ वे भाई आए थे न, वे मुझ से कहने लगे, 'दादाजी आपकी कृपा से मुझे कुछ-कुछ

शक्तियाँ मिल गई हैं। फिर मैंने पूछा, 'जब कोई गालियाँ दे तब क्या करते हैं? संयम में रहते हो?' तब कहने लगे, 'नहीं, उस वक्त मेरी खिड़की बंद हो जाती है,' कहते हैं। खिड़की बंद हो गई मतलब क्या हो जाता है, आपकी समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : वे सामनेवाले की बात का अंदर असर ही नहीं होने देते।

दादाश्री : हाँ, अंदर असर नहीं होने देते।

वे कहते हैं 'मैं मन पर लेता ही नहीं।' यह कैसी मूर्खता का कारण है! मन पर नहीं लेना, वह। मैंने कहा, 'तू मन पर क्यों नहीं लेता?' फिर कहने लगा, 'मुझ पर कोई असर नहीं होने देता।' तब मैंने कहा 'नहीं, नहीं यह तो संयम में रहने का स्कोप (अवकाश) मिला और लाख रूपये देने पर भी आपको ऐसा स्कोप नहीं मिलेगा।'

यह तो संयम का 'स्कोप' मिला, उसका आपने लाभ नहीं उठाया। यदि आप किसी से कहो कि, 'आप मुझे डाँटो और मैं संयम में रहूँगा, तो ऐसा हो ही नहीं सकता न। यह तो कुदरती कभी-कभार प्राप्त हो जाए तब आप कान बहरे करके, 'हटो, वह तो बोलेगा, उसे तो बुरी आदत लग गई है,' ऐसा करेंगे तो क्या लाभ (फायदा)? यदि दुर्गंध आ रही हो और नाक दबाकर रखें तो उसमें आप संयम में कहाँ रहे? (आपने संयम कहाँ रखा।)

जगत् के लोग ऐसा कर सकते हैं कि मन पर कोई बात नहीं लेते। मन पर बात नहीं लेना वह तो जगत् के लोग भी करते हैं।

लाभ उठाइए, प्राप्त संयोग का

मैंने (एकबार) पाँच सौ रूपए का इनाम घोषित किया था कि 'यदि कोई दादा को एक धौल मारेगा, तो उसे पाँच सौ रूपए दूँगा।' चाहे कोई भी, भले ही कोई गरीब व्यक्ति हो यदि वह भी आकर मारेगा

तो पाँच सौ रूपए दूँगा, लेकिन कोई मारने नहीं आया। जो लोग अंदर दुःखी रहते हों उनसे भी कहता था, तब वे कहते, 'नहीं भाई हम ऐसा नहीं करेंगे, दुःख भुगत लेंगे, लेकिन आपको क्यों धौल मारें?'

अर्थात् यदि पैसे देने पर भी नहीं मिलता। तो जब फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त) मिले तब आपको क्या करना चाहिए? वह स्कोप जाने देना चाहिए? आपको क्या लगता है?

गढ़ी संयम, ज्ञाता दृष्टा पद से

अतः आपको मन पर तो लेना है। ज्ञाता-दृष्टा रहने को ही मन पर लेना कहते हैं। मन पर तो लेना ही चाहिए न। मन पर तो आएगा ही।

इसकी तो अपने आप ही खिड़की बंद हो जाती है। तब मैंने कहा, 'खिड़की बंद मत होने देना, यह तो अवसर (मौका) है।' आपको ऐसा नहीं लगता कि आपने मौका गँवा दिया?

प्रश्नकर्ता : वह तो ठीक है। मन पर इफेक्ट (असर) होने देना चाहिए। लेकिन यदि ज्ञाता-दृष्टा रहेंगे तो उसका इफेक्ट उस पर नहीं होगा न!

दादाश्री : यदि ज्ञाता-दृष्टा रहेगा तो उसे 'मन पर लेना ही कहा जाएगा' अर्थात् यह अवसर, आपके लिए सुअवसर है। ज्ञाता-दृष्टा अर्थात् आपको इससे ज्यादा कुछ और करने का रहा ही नहीं न। यह तो, वह ज्ञाता-दृष्टा नहीं रहता मन पर पर्दा पड़ जाता है। ज्ञाता-दृष्टा रहने को संयम ही कहते हैं, उसी को संयम कहते हैं। 'मन में धारण नहीं करना' उसे अवसर नहीं कहते। उसे ज्ञाता-दृष्टा रहना नहीं कहलाता।

शुद्ध संयम उत्पन्न होता है अक्रम विज्ञान से

क्रमिकमार्ग में तो कभी भी शुद्ध संयम हो ही नहीं सकता, अशुद्ध संयम ही रहता है। यहाँ पर संयम परिणाम उत्पन्न होता है और जिसे संयम कहा

जाता है, ऐसा शुद्ध संयम। वह इस अक्रम विज्ञान के आधार पर किया जा सकता है।

प्रश्नकर्ता : वाणी और देह पर संयम रह सकता है लेकिन मन पर संयम कैसे रहेगा?

दादाश्री : मन तो उल्टा ही ढूँढता है। तो हमें संयम करते-करते मन से कुछ कहना पड़ता है न, 'यह तो महान उपकारी है।' और आप तो कहते हो 'यह नालायक है' तो फिर मन उल्टा चलता है। अर्थात् वहाँ पर 'ये तो महान उपकारी है, इनका तो उपकार भूला ही नहीं जा सकता। इसलिए चुप रह न,' ऐसा कहना चाहिए। ऐसा कभी कहा नहीं है न? वह एकदम नालायक हो, फिर भी हमें मन से कहना चाहिए कि ज़बरदस्त उपकारी है हमारे लिए! तो मन चुप!

सावधान रहना कषायों के हमले के विरुद्ध

जब कषायों का हमला हो, उस समय संयम में रहना चाहिए। हमला किसका होता है? कषाय का। अपने ये कषाय जो अंडर ग्राउन्ड (भूगर्भ में) चले (छिप) गए हैं, तो वे ऊपर तो आएँगे न! अभी तो अंडर ग्राउन्ड चले गए हैं, हं...मार नहीं दिए हैं। (खत्म नहीं किए)। 'मारना' शब्द ही हमारे यहाँ नहीं होता क्योंकि उन्हें मारना तो हिंसा ही है अतः हम हिंसा नहीं करते। आप यदि तीन साल के अंदर दादा का साथ छोड़ दें तो फिर जो अंडर ग्राउन्ड गए हुए हैं, वे शुद्धात्मा की गद्दी वापस समेट लेने के लिए तैयार ही बैठे हैं। क्योंकि वे तीन साल तक भूखे रह सकते हैं। क्रोध-मान-माया-लोभ, ये चारों कितने समय तक भूखे रह सकते हैं, उसकी आपको मैं यह लिमिट दे रहा हूँ।

तीन साल तक यदि आप खुराक नहीं दोगे तो फिर वे समझ जाएँगे कि 'अब यहाँ हमें खुराक नहीं मिलेगी और हमारा काम नहीं बन पाएगा।' इसलिए अन्य घरों में लोगों के यहाँ बहुत खुराक है। क्रोध-मान-माया-लोभ को खुराक ढूँढने तो जाना ही नहीं पड़ता।

(यह) राह पर आ जाए तब उत्पन्न होता है संयम परिणाम

कुछ लोगों का तो राह पर आ गया है। इसलिए यहाँ पर ज़्यादा नहीं आते, कभी-कभी आ जाते हैं। खुद की ज़रूरत के मुताबिक राह पर आ गया है न। उनसे कहा ही है कि राह पर आने तक यहाँ पर आते रहना। फिर भी ज्ञानी के पास बैठे रहने जैसी उत्तम चीज़ कोई भी नहीं है। उसके बावजूद भी अगर नहीं बैठ पाएँ तो हर्ज नहीं है। लेकिन राह पर आने तक तो बहुत भावना रखनी चाहिए। जब तक संयम परिणाम उत्पन्न नहीं हों तब तक राह पर आया नहीं कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, मैं तो ऐसा मानता हूँ कि चाहे कितने भी संयम परिणाम उत्पन्न हो जाएँ फिर भी ज्ञानीपुरुष की सेवा और ज्ञानीपुरुष का सतत सानिध्य बहुत काम का है।

दादाश्री : उसके बगैर इतना ज़्यादा संयमपना उत्पन्न नहीं होगा। संयमपना उत्पन्न होने का साधन यही है।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि आजकल काल की विचित्रता ऐसी है कि घर बैठकर आप इतना ज़्यादा ज्ञान में रह सको, इस बात में कोई दम नहीं है।

दादाश्री : अरे! काल की तो बहुत विचित्रता है, मनुष्य फिसल जाता है। लेकिन जब कोई बड़ी मुसीबत आ जाए, तब पता चलता है न! फिर तो तुरंत उसे अनुभव हो जाता है न कि मैं ज्ञान में नहीं रह पाता? बड़ी मुसीबत आ जाए तब! तब वह फिर से जल्दबाजी करने लगता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, यह तो क्या है कि थोड़ी सी शांति होने लगती है न, इसलिए सभी को ज़रा मज़ा आ जाता है।

दादाश्री : शांति लगती है उसी की तो यह सारी परेशानी है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ। और अभी कोई दोष नहीं दिखाई देते इसलिए उसे मज़ा आता है कि अब बस हम ज्ञानी हो गए। लेकिन यदि जागृति रहे न तो एक मिनट भी सहन नहीं कर सकें, ऐसा है।

ज्ञानी संग सदा संयम

संयम परिणाम उत्पन्न होने का मुख्य साधन ज्ञानीपुरुष ही हैं। यह तो ठेठ तक का काम निकाल लेना है। शास्त्रकारों ने ज्ञानीपुरुष के पीछे ही पड़े रहने को कहा है। लेकिन अभी तो फाइलें ही इतनी हैं, कि फिर इंसान साथ में कैसे पड़ा रह सकता है? लेकिन भावना करनी है, फिर हमें जितना टाइम मिला उतना ठीक है। और संयम सुख का तो कुछ कहने जैसा है ही नहीं। पूरी जिंदगी में, किसी काल में देखा ही नहीं हो ऐसा संयम सुख उत्पन्न होता है।

अब (वह सुख कैसा तो), यदि हलवाई की बेटी से कहें कि 'चल तुझे जलेबी दिलवाता हूँ,' तो वह कहेगी, 'मुझे तेरी जलेबी का क्या करना है।' ऐसा है यह। हलवाई की बेटियों जैसा। यह तो संयम सुख यानी वैभव सुख कहलाता है।

जागृति से बढ़ता है संयम परिणाम

प्रश्नकर्ता : दादाजी, लेकिन जैसे संयम परिणाम आप कह रहे थे न, वैसे कभी याद नहीं रहते। संयम परिणाम याद रहने चाहिए।

दादाश्री : संयम परिणाम अर्थात् यथार्थ जागृति कहलाती है। संयम परिणाम में तो देर लगेगी। पहले आपने यह समझ लिया इसलिए अब आपकी समझ में आने के बाद संयम परिणाम उत्पन्न होगा। यदि कोई बड़ी परेशानी आ जाए तो फिर देर लगती है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, बड़ी यानी ऑफिस में भी देर लगती है। जब कुछ बड़ी परेशानी आ जाए न, तब।

दादाश्री : संयम के छूट जाने के बाद पता चलता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, फिर पता चलता है।

दादाश्री : तीर छूटने के बाद पता चलता है।

अतः बाद में धीरे-धीरे इस संयम से बड़े संयम जीत सकते हैं। धीरे-धीरे छोटे संयम जीत लो तो फिर बड़े, उसमें से फिर बड़े, ऐसे करते-करते फिर जीत सकते हैं।

तब कहलाता है वास्तविक संयम

प्रश्नकर्ता : वास्तविक संयम किसे कहते हैं?

दादाश्री : यदि कोई भयंकर अपमान करे तो भी चेहरे पर से आनंद चला नहीं जाता। यदि कोई काफी रूपए ले जाए तो भी आनंद नहीं जाता। कोई कपट करे, उससे भी आनंद नहीं जाता। कोई तिरस्कार करे तो भी आनंद नहीं जाता.....ऐसा हो तब।

मान का - लोभ का संयम

प्रश्नकर्ता : मान का संयम और लोभ का संयम इसे और ज़रा विस्तार से समझाईए।

दादाश्री : ऐसा है, कुछ मनुष्यों में मान को जीतने का संयम आ गया होता है। मान का संयम यानी कि यदि कोई गालियाँ देने लगे या अपमान कर दे, तो भी संयम, अर्ध संयम का पालन वह कर सकता है और लोभ का संयम यानी उसे तुरंत बेसुध कर डालता है। ऐसी परिस्थिति में और भी असंयम उत्पन्न हो जाता है। बाद में फिर जागृति आ जाती है लेकिन देर से आती है। यानी लोभ (के समय) में लगभग वन फोर्थ संयम ही रहता है। मान में (के समय) संयम का पालन कर सकते हो। कुछ ज्ञाति के लोग मान के समय संयम का पालन नहीं कर सकते, लोभ के संयम पालन कर सकते हैं। बनिये की लोभ की ग्रंथि बड़ी होती है और क्षत्रिय की मान की ग्रंथि बड़ी होती है। उसे लोभ के बारे में कुछ

पड़ी नहीं रहती। हर एक ज्ञाति का अलग-अलग होता है न!

प्रश्नकर्ता : संयम और अर्धसंयम में क्या फर्क है ?

दादाश्री : यदि किसी ने कहा हो कि, 'चंदूभाई ने यह सब बिगाड़ दिया।' उस घड़ी भीतर अपने परिणाम बदल जाएँ, लेकिन 'यह गलत हो रहा है,' ऐसा 'जानना' उसे अर्धसंयम कहा है और ऐसे परिणाम भीतर खड़े ही नहीं हों, उसे पूरा संयम कहा है।

संयम से प्रकट होती है आत्मशक्ति

यदि आपको कोई धमकानेवाला मिल जाए तो बहुत प्रोफिट (फायदेमंद, लाभदायक) है, उस जैसा कोई प्रोफिट नहीं है। क्योंकि उस वक्त आप आज्ञा में आ जाते (रहते) हो, आज्ञा में रहकर, समभाव से उसका *निकाल* करते हो। *निकाल* करने से अंदर शांति हो जाती है, खुद को अंदर शांति होते ही ज़बरदस्त आत्मशक्ति बढ़ जाती है। आत्मशक्ति बढ़ाने के लिए जितने कर्मों का आप समभाव से *निकाल* करते हो, उससे आत्मशक्ति बढ़ती है। शक्ति तो है ही लेकिन प्रकट करते हैं। मतलब जितने भारी (ज़बरदस्त कर्म) होते हैं, जब एकदम ज़बरदस्त जोखिम (मुसीबत) आ जाए तब उसका समभाव से *निकाल* किया तो बहुत ज़बरदस्त शक्ति बढ़ जाती है।

ज्ञान द्वारा उत्पन्न होते हैं अनंत संयम परिणाम

भगवान ने कहा है कि ज्ञानीपुरुष को... ज्ञानी किसे कहते हैं? कि जिसे भी आत्मा प्राप्त हो गया हो, उन सभी को हम ज्ञानी ही कहते हैं। वे सारे अंश, ज्ञानी या सर्वांश ज्ञानी, लेकिन सभी का ज्ञानी में ही समावेश होता है।

इसलिए कहते हैं कि ज्ञानीपुरुष में यह अनंता संयम परिणाम उत्पन्न होते हैं।

प्रश्नकर्ता : अनंत संयम परिणाम ?

दादाश्री : हाँ। ऐसा सब (विपरीत संयोगवाला) मिलते हैं। जब अज्ञान दशा में मिलते हैं तब तो निरे पाप ही बाँधते हैं। बल्कि कषाय करके असंयम और बढ़ता है। और अब तो संयम... अनंत संयम परिणाम बढ़ते जाते हैं। इसलिए अब तो जो भी मिले, वह बहुत फायदेमंद है। जब कट जाए तो फायदा। जिस समय जो-जो होता है, वही उस समय फायदेमंद। ज़बरदस्त आत्मा का संयमपना प्रकट होता है। ऐसा हितकारी, यानी वह (प्रतिकूल संयोग) भी हितकारी और यह (विपरीत संयोग) भी हितकारी, दोनों प्रकार से हितकारी। कर्म नहीं बंधते और आत्मशक्ति प्रकट करते हैं। आपने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया ?

प्रश्नकर्ता : अनुभव किया है, दादाजी। लेकिन जब कठिन (मुश्किल) फाइलें आती हैं, उस वक्त.....

दादाश्री : उससे हमें क्या नुकसान है ? कहे 'चाहे जितनी भी मुश्किल आनी हो आए न!' संयम परिणाम उत्पन्न होगा न!

संयम से शक्ति दो गुनी होती है

प्रश्नकर्ता : तो अब इनसे (कठिन फाइलों से) कैसे छूट पाएँगे ?

दादाश्री : हम जो ये बातें कर (बता) रहे हैं, उस प्रकार से छूट सकते हैं। प्लस-माइनस करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : मेरी ऐसी स्टेज क्यों नहीं आती ? क्या पुरुषार्थ की कमी है ?

दादाश्री : वह आपकी कोमलता (नरम स्वभाव) है न और ये बातें, हम जो कर रहे हैं न वे सुनी नहीं होतीं। सुनने के बाद कभी एक बार अमल में लाता है। यदि एक बार अमल में लाए तो फिर एक बार संयम रहता है। इस तरह दूसरी बार दो गुणा रहता है, तीसरी बार चार गुणा रहता है। फिर एकदम संयमी हो (बन) जाता है इंसान।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : दादाजी, यदि हमसे एक बार संयम रहे और दूसरी बार ऐसा वक्त आ जाए कि हमसे संयम न रह सके, तो? हमारी शक्ति कम हो जाएगी?

दादाश्री : नहीं रह पाए तो उसके फल स्वरूप आपको लाभ नहीं मिलेगा लेकिन वह शक्ति जो बढ़ चुकी है, वह तो फिर से बढ़ती ही है। यानी एक बार संयम रखने से उसका दो गुणा फल मिलता है, दो का चार गुणा, चार का सोलह गुणा, सोलह का दो सौ छप्पन गुणा।

यानी इस संयम का नियम कैसा है। पूरे दिन में दो बार संयम रहे तो दो को दो से गुणा करें, उतना शाम को जमा होता है। संयम में आए कि शक्तियाँ प्रकट होती जाती हैं।

प्रश्नकर्ता : यदि बीच में चूक जाएँ तो जो जमा हो चुकी है, वे शक्तियाँ तो हमारे पास ही रहेंगी न?

दादाश्री : हाँ, इसलिए संयम! आत्मा है इसलिए सबकुछ संयम में लाओ। अब संयम तो, यदि आपके सामने ऐसी परिस्थिति खड़ी होगी तो ही आएगा, वरना कैसे आएगा? इन भाईसाहब को ऐसी बहुत परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई थीं, तो जबरदस्त संयम उत्पन्न हो गया। जब जबरदस्त संयम रखने का समय आया तब पूरी तरह से संयमी हो गए। अब छोटी-छोटी बातों में वे किसी की सुनते ही नहीं है ये। ऐसे तेरे भी अच्छे उदय आए, हैं न? थोड़े बहुत आए हैं।

प्रश्नकर्ता : व्यवसाय में तो ऐसे सब लोग मिल ही जाते हैं।

दादाश्री : हाँ...यानी खराब (बूरे) उदय तो बल्कि अच्छे हैं, हमें संयमी बनाते हैं। बहुत मुलायम (अच्छे) उदय होंगे तो वे तो हमें संयमी नहीं बनाएँगे न। यानी संयम तो सब से बड़ा साधन

कहलाता है। पूरे दिन में यदि चार बार संयम में रहें तो शाम को चार चोके सोलह संयम शक्ति जमा होगी।

संयम के गुणा से, बढ़ती है ज्ञानी को शक्ति

हमारा संयम देखने योग्य है। हमारी, ज्ञानीपुरुष की संयम शक्ति इसी तरह बढ़ती रहती है। क्योंकि हमें तो रोज़ पाँच-पच्चीस संयम हो ही जाते हैं न! तो फिर पच्चीस गुणा पच्चीस, छः सौ पच्चीस, संयम शक्ति इकट्ठी हो जाती है।

यानी हमें दस पंद्रह संयम तो रोज़ हो जाते ही हैं। यों ही दस-पंद्रह संयम तो हमारे हो ही जाते हैं। यानी पंद्रह गुणा पंद्रह, फिर उसका दो गुणा, ऐसा तो रोज़ जमा होता ही रहता है। तो हमारे पास कितनी रकम जमा होगी? मल्टिप्लीकेशन (गुणा) से जमा हो सकती हैं, इसलिए मैं कहता हूँ कि भाई यह सिर्फ व्यापार नहीं है। यदि एक बार सौ संयम रखा तो (सौ संयम जमा किए) तो मल्टिप्लीकेशन होकर शाम को तेरे पास दस हजार रुपए की रकम जमा हो जाएगी।

हमारी शक्ति संयम के गुणाकार से बढ़ी है। ज्ञान होने के बाद तो हमें अनंत संयम परिणाम रहते हैं। इसलिए जो मिला वह सभी फायदेमंद, बाहर के उपसर्ग में तो आत्मा का संयम जबरदस्त रहता है।

संयम द्वारा उत्पन्न होता है यथार्थ व्यवहार

आत्माज्ञान किसे कहते हैं कि आत्माज्ञानी का व्यवहार जगत् के मनुष्यों की तुलना में बहुत उच्च होता है। यहाँ चाहे जैसा व्यवहार करें तो भी किसी की ओर से फरियाद नहीं आए, तो वह यथार्थ व्यवहार कहलाएगा। लेकिन वह यथार्थ कब कहलाएगा? भगवान के कहे अनुसार होगा तब, भगवान की आज्ञापूर्वक होगा तब, उसमें क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते। वहाँ पर व्यवहार अच्छा शुद्ध

होता है। या फिर जहाँ पर क्रोध-मान-माया-लोभ पर संयम रहता हो तब तक भगवान ने चला लिया है।

आंतरिक संयम, वही शुद्ध व्यवहार

प्रश्नकर्ता : तो दादा, लोगों को उपकारक होने के लिए महात्माओं को इस बारे में कुछ मार्गदर्शन दीजिए न। क्योंकि ये लोग तो व्यवहार को ही देखते हैं।

दादाश्री : व्यवहार को देखते हैं, लेकिन ऐसा है न, मार्गदर्शन ऐसा होना चाहिए कि अपने में व्यवहार भले ही चाहे जैसा हो लेकिन संयम में आ जाना होना चाहिए। संयम तक तो जाना ही पड़ेगा न? पुरुषार्थ होना चाहिए संयम का। संयम खुद के हाथों में है। व्यवहार मतलब आचार और वाणी, सब पराधीन है लेकिन संयम तो खुद के हाथों में है न! संयम हो न, तो लोग खुश हो जाते हैं। यदि सौ लोग उग्र हो जाएँ और आप उग्र न हों, शांत रहो, तो खुश नहीं हो जाएँगे? प्रभाव नहीं पड़ेगा कि देयर इज़ समथिंग (उनमें कुछ है)। मतलब यह धीरे-धीरे हमारे महात्माओं में शक्तियाँ आएँगी न। यह आंतरिक शक्ति उत्पन्न हुई है उनमें। लेकिन जैसे-जैसे बाह्य सुख, बाह्य शक्तियाँ बाहर प्रकट होंगी वैसे-वैसे ये लोग एक्सेप्ट करेंगे। वर्ना एक्सेप्ट कैसे करेंगे? बाहर की शक्तियाँ प्रकट नहीं हों तो कैसे एक्सेप्ट करेंगे!

यह आपको तो अंदर जो आंतरिक संयम है वही व्यवहार है और वह शुद्ध व्यवहार है। अब बाहर का व्यवहार *निकाली* व्यवहार है। खाली समभाव से *निकाल* ही करने जैसा है, और कुछ करने जैसा है ही नहीं।

अपना यह सारा करारी (करार किया हुआ) माल है, उसमें आपका शुद्ध उपयोग चला नहीं जाता। उस माल का तो जैसे-जैसे समभाव से *निकाल* होता जाएगा, वैसे-वैसे आपका संयम बढ़ता जाएगा। संयम को ही पुरुषार्थ कहा है। जैसे-जैसे संयम बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे उसका *निकाल* भी जल्दी

होता जाएगा। ओटोमेटिक होते-होते सबकुछ 'केवलज्ञान' पर आ जाएगा।

संयमपूर्वक व्यवहार, प्राप्त करवाएगा पूर्णता

अपने इस वीतराग विज्ञान में, हमारा अक्रम विज्ञान वह संपूर्ण व्यवहार-निश्चय का मार्ग है। क्योंकि व्यवहार बिल्कुल संयमपूर्वक रहता है। व्यवहार कैसा होता है? गाली दे वह चंदूभाई, खुद मना करते हैं, 'ऐसा नहीं होना चाहिए' वह संयम आपका। और आपके संयम की कीमत है। चंदूभाई के संयम की कीमत नहीं है। अतः यह संयमपूर्वक व्यवहार है इसलिए इस व्यवहार को हम शुद्ध व्यवहार कहते हैं और शुद्ध व्यवहार के बेसमेन्ट ऊपर कम्पलीट शुद्ध निश्चय खड़ा है। जहाँ शुद्ध व्यवहार है, वहाँ आत्मा है। जहाँ संयमपूर्वक व्यवहार नहीं है, वहाँ पर ऐसा नहीं मान सकते कि आत्मा प्राप्त होगा। व्यवहार संयमपूर्वक होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इसलिए महात्माओं को समझने में ज़रा गड़बड़ होती है।

दादाश्री : नहीं, यह ज्ञान देने के बाद आपका शुद्ध व्यवहार ही होता है, लेकिन वह उल्टा मानता है। क्रिया हिंसक दिखती है लेकिन व्यवहार शुद्ध ही है।

प्रश्नकर्ता : दादा का ज्ञान मिलने के बाद अंदर से संयम परिणाम उत्पन्न होता है।

दादाश्री : संयम ही है, खुद अलग ही है। इसलिए अंदर संयम परिणाम को लेकर वह शुद्ध व्यवहार ही कहलाता है। यह परिणाम, उस पर संयम होने की वजह से शुद्ध ही कहलाता है। यह अलौकिक विज्ञान है! वह तो व्यवहार में ऐसे आरपार निकल जाना चाहिए। अपना ज्ञान व्यवहार को आरपार कर दे ऐसा है। अलौकिक विज्ञान है! यह विज्ञान यदि समझ लिया जाए तो कल्याण हो जाएगा सारे जगत् का।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

२०-२७ दिसम्बर: अडालज त्रिमंदिर संकुल में दादानगर में आयोजित आप्तवाणी श्रेणी ३ और ७ के पारायण में आठ हजार से भी ज्यादा महात्माओं ने हिस्सा लिया, जिसमें भारत के विविध राज्यों से आए हुए हिंदी भाषी महात्मा, एन.आर.आई महात्मा और स्पेन, जर्मनी, अमरिका से आए हुए विदेशी महात्मा भी शामिल थे। पारायण के दौरान आत्मा के गुणों पर अद्भूत सत्संग हुआ और महात्माओं ने अधिक स्पष्टिकरण के लिए बहुत प्रश्न पूछे। 'आत्मा के गुण और स्वभाव' की विस्तृत समझ देनेवाली आप्तवाणी श्रेणी-१४, भाग-४, समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (पूर्वार्ध) हिंदी ग्रंथ तथा बच्चों के लिए दादा भगवान भाग-५ तथा चित्रकथा की पुस्तकों का भी विमोचन किया गया। आत्म गुणों की भजना की सामायिक का महात्माओं को बहुत सुंदर अनुभव हुआ। पूज्य श्री ने बताया कि आनेवाले पर्यूषण पारायण में आप्तवाणी श्रेणी-१३ (पूर्वार्ध) ग्रंथ पर पारायण होगा।

२८ दिसम्बर : पारायण के अगले दिन, महात्माओं द्वारा घरों और ऑफिसों के लिए ली गई श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा विधि पूज्य श्री द्वारा की गई। जिसमें ७ इंच से लेकर ४५ इंच की लगभग १००० प्रतिमाएँ थीं। प्रतिष्ठा विधि के दौरान सामूहिक विधि-प्रार्थना और असीम जय-जयकार किए। बाद में महात्माओं ने अपनी-अपनी मूर्तियों का प्रक्षाल-पूजन किया। श्री सीमंधर स्वामी और संगमेश्वर दादा भगवान की आरती की गई। अंत में महात्माओं ने सिर पर मूर्ति रखकर गरबे किए। सभी को ऐसा अनुभव हुआ जैसे समग्र वातावरण दिव्य और अलौकिक हो गया।

३१ दिसम्बर : नव वर्ष की पूर्व संध्या पर त्रिमंदिर के जायजेन्टिक हॉल में विशेष भक्ति का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्यश्री ने रात बारह बजे नए वर्ष की शुभेच्छा के साथ विशेष संदेश में कषायों को छोड़कर जागृति व सत्संग को बढ़ाने पर जोर दिया।

२ जनवरी : परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर शाम को एक घंटे के लिए जगत् कल्याण के लिए कीर्तन-भक्ति तथा एक घंटे स्पेशल सीडी दिखाई गई। रात में दादाई भक्ति पदों का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

३-४ जनवरी : गुजरात की राजधानी गांधीनगर में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि में १४०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग में लगभग २५० महात्माओं ने पूज्य श्री के सत्संग व दर्शन का आनंद लिया। आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में लगभग ७०० महात्मा आए थे।

८-१२ जनवरी : इस वर्ष से महात्मा बहनों के लिए विशेष वार्षिक शिविर पाँच दिन के लिए आयोजित करने की शुरुआत हुई। जिसमें देश-विदेश से लगभग ४५०० महात्मा बहनों ने हिस्सा लिया। पूज्य श्री द्वारा 'अपेक्षा' टॉपिक पर किए गए विशेष सत्संग से, उस टॉपिक पर करवाई गई एक्टिविटी द्वारा लिखकर सामायिक करने से और उसी टॉपिक पर किए गए ड्रामा की वजह से बहनों को इससे संबंधित बहुत सी नई बातें जानने को मिलीं और दृढ़ता आ गई कि दोषों की जड़ तक पहुँच पाएँगे। ब्रह्मचर्य पुस्तक पर वाचन और उस पर पूज्य श्री का विशेष सत्संग भी हुआ। आप्तपुत्री बहनों द्वारा बहनों के विविध ग्रुप के लिए सत्संग भी हुए।

१४-१८ जनवरी : महात्मा भाईओं के लिए भी पाँच दिवसीय वार्षिक शिविर में २१०० से भी अधिक महात्माओं ने लाभ उठाया। जिसमें २०० एन.आर.आई महात्मा और भारत के अन्य राज्यों से लगभग ६० हिंदी भाषी महात्मा आए। पूज्य श्री द्वारा ग्रीन पासवाले महात्माओं के लिए 'अपमान के दुःख, भोगवटा और असर' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुआ। पाँच दिनों के दौरान आप्तपुत्रों द्वारा सत्संग और ग्रुप डिस्कशन, गरबा, नाटक, आप्तपुत्रों तथा महात्माओं के ब्रह्मचर्य संबंधी अनुभव का सेशन वगैरह कार्यक्रम हुए। अंतिम सेशन में 'अपमान' टॉपिक पर वर्कशोप किया गया, जिसमें १०-१० मिनट की सामायिक भी अपमान के अलग-अलग प्रसंगों पर की गई और सभी महात्माओं के लिए ब्रह्मचर्य पुस्तक का वाचन और उस पर सत्संग हुआ। शिविर से महात्माओं में जागृति बढ़ी और ब्रह्मचर्य और आत्म जागृति के लिए महात्माओं का निश्चय और भी दृढ़ हो गया।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पुणे दिनांक : 22 फरवरी समय : सुबह 11 से 1-30, शाम 4 से 6-30 संपर्क : 9422660497
स्थल : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, गोर्वधन चौक के पास, मार्केट यार्ड.

सोलापुर दिनांक : 23 फरवरी समय : शाम 4 से 6 संपर्क : 9765081869
स्थल : कन्हैयालाल ब्रधर्स मेडिकल स्टोर्स के उपर, दत्ता चौक, सोलापुर.

पटना दिनांक : 28-29 मार्च - आप्तपुत्रों के संग सत्संग शिविर
स्थल, समय तथा आवास रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क करें 7352723132

उदयपुर दि : 21 फरवरी संपर्क : 9414538411

गया दि : 30 मार्च संपर्क : 9835623307

पाली दि : 22 फरवरी संपर्क : 9461251542

धनबाद दि : 31 मार्च संपर्क : 9431191375

जोधपुर दि : 23 फरवरी संपर्क : 9214410659

टाटानगर दि : 1 अप्रैल संपर्क : 9709220292

जैतारण दि : 24 फरवरी संपर्क : 9413172239

बालासोर दि : 2 अप्रैल संपर्क : 9090276204

अजमेर दि : 25 फरवरी संपर्क : 9460611890

भुवनेश्वर दि : 3 अप्रैल संपर्क : 9668159987

टोंक दि : 26 फरवरी संपर्क : 9314788352

कोलकाता दि : 4-5 अप्रैल संपर्क : 9830093230

जयपुर दि : 1 मार्च संपर्क : 9785891606

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत
- + 'आस्था' पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन' - बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन' - भोपाल पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन' - गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
 - + 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - + 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
- USA
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत
- + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
 - + 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन' गुजरात-गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - + 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
 - + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- USA
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
- UK
- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)
- Singapore
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)
- Australia
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)
- New Zealand
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- USA-UK-Africa-Aus. + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

वडोदरा

दि. २०-२१ फरवरी (शुक्र-शनि), रात ७ से ९-३० - सत्संग तथा २२ फरवरी (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
दि. २३ फरवरी (सोम), रात ७ से ९-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : समता ग्राउन्ड, बा-बापुजी उद्यान के सामने, सुभानपुरा, वडोदरा (गुजरात). संपर्क : 9924343335

वलसाड

दि. २४ फरवरी (मंगल), शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा २५ फरवरी (बुध), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि
दि. २६ फरवरी (गुरु), शाम ६ से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : तडकेश्वर मंदिर ग्राउन्ड, फ्लाय ओवर ब्रिज के पास, अब्रामा, वलसाड (गुजरात). संपर्क : 9924343245

सुरत

दि. २७-२८ फरवरी (शुक्र-शनि), रात ८ से १०-३० - सत्संग तथा १ मार्च (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
दि. २ मार्च (सोम), रात ८ से १०-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : SMC पार्टी प्लोट, उमरा पुलिस स्टेशन के पास, अठवा लाइन्स, सुरत (गुजरात). संपर्क : 9574008007

अडालज त्रिमंदिर

दि. १९ मार्च (गुरु), शाम ४-३० से १० - पूज्य नीरू माँ की ९वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम
दि. २०-२१ मार्च (शुक्र-शनि), शाम ४-३० से ७ - सत्संग तथा २२ मार्च (रवि), शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Germany-UK Satsang Schedule (2015)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email: info@uk.dadabhagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
27-31 March	TBA	TBA	Satsang & Gnanvidhi	Germany - Willingen
2-6 Apr-15	All Day	All Day	UK Shibir	Pakefield
8-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	Nagreacha Hall, 202 Leyton Road, London, E15 1DT
9-Apr-15	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
9-Apr-15	6PM	10PM	Gnanvidhi	
10-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang For Mahatmas Only	Wanza Community Centre, Pasture Lane, Leicester, LE1 4EY
11-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	
12-Apr-15	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
12-Apr-15	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
13-Apr-15	7-30PM	10PM	Aptaputra Satsang	
17-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang in English	Harrow Leisure Centre, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
18-Apr-15	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
18-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	
19-Apr-15	9-30AM	12-30PM	Simandhar Swami Pratishta	
19-Apr-15	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
19-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	
20-Apr-15	7-30PM	10PM	Satsang	

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

फरवरी २०१५
वर्ष-१० अंक-४
अखंड क्रमांक - ११२

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

प्रकृति के डिस्चार्ज से खुद का अभिप्राय जुदा, वही संयम

चंदूभाई (फाइल नं-१) जो कुछ भी करें, किसी के लिए अहितकारी हो ऐसा करें, किसी को गालियाँ दें फिर भी आपका अभिप्राय बिल्कुल जुदा ही रहे कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा क्यों कह रहे हो?' तो वह संयम कहलाता है। चंदूभाई जो करते हैं, वह आपको अनुकूल न आए, आपका अभिप्राय उससे अलग ही रहे। चंदूभाई किसी पर गुस्सा हो जाएँ तो आपको अच्छा नहीं लगता न? चैन नहीं आता न? वही संयम है। खुद का अभिप्राय प्रकृति से अलग रहना, वही संयम। मतलब जैसे कि दो इंसान अलग-अलग हों, उस तरह से बरते, वही संयम है।

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.